मासिक
वीर

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद
अहिंसा परमो धर्मः
स्थापित 1923

मूल्य रु. 5/-
संस्थापक : ब्र. सीतलप्रसाद जी
वीर निर्वाण संवत् 2544
वर्ष : 35, अंक : 8, कुल पृष्ठ 28
अगस्त 2018

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद का मुखपत्र

चातुर्मास

पृथ्वी, वायु,
वनस्पति औ
जल में
जीव समायें,
चातुर्मास के
चार माह
में
साधु कहीं
न जायें।

'प्रदीप'

गुरु पूर्णिमा

देव-शास्त्र-गुरु के
हम पूजक
जैनधर्म है
अपनी शान
देव नहीं
देखें हैं हमने
नहीं शास्त्र
का बिल्कुल
ज्ञान
वर्तमान में
गुरु दिगम्बर ही
सच्चे उपदेशक हैं।

'प्रदीप'

एक पावन परिवर्तन
चातुर्मास

गुरु पूर्णिमा पर विशेषः

प्यार लो विद्यार्थियो

जब कभी बीहड़ अकेलापन
उदासी घेरती मुझको
जिन्दगी की क्षुद्रताएं
विवश करती हैं
अँधेरा ही अँधेरा देखतीं
आँसूभरी आँखें
उफनते दूध सा जब धैर्य
मन का साथ देता छोड़
तब तुम्हें शायद नहीं यह ज्ञात
कितनी शक्तियाँ लेकर
तुम्हारा प्यार
मेरे पास आता है,
मुझे अपने सुदृढ़ खामोश कंधो पर
बिठाता है, तुम्हारे पास लाता है।
मुझे तुम देखते पथ में
तुम्हारे पाँव की गतियाँ बदल जातीं
तुम्हारी विनत आँखों से
लजीली शिष्टता मानो बिखर जाती
बड़ी शैतान हँसियाँ
होंठ पर आकर ठिठक जातीं।
'मैं नहीं हूँ एक'
सहसा कंठ से मेरे निकल जाता।
तुम्हारे कमल हाथों की
सुदृढ़ और स्निग्ध छाया
तपे माथे पर स्वयं के
देर तक महसूस करता
मैं नये उत्साह से
जैसे सँवर जाता।
प्यार लो विद्यार्थियों मेरे,
तुम्हारी शक्ति मुझमें बोलती है
थके मन-मस्तिष्क में
जैसे अमृत-सा घोलती है।
मैं बहुत मजबूत रक्खूँगा
स्वयं के ज्ञान के कन्धे
कि इन पर बैठकर
तुम देख पाओ दूर तक, आओ
कि यह जो बहुत सा कीचड़
यहाँ पर जम गया है
मैं यहाँ पाषाण सा उभरूँ
पाँव रखकर
तुम सुरक्षित निकल जाओ।

डॉ. जयकुमार जलज
30, इन्दिरानगर, रतलाम-457001 (म.प्र.)
फोन : (07412) 260911, 404208
मो.: 9407108729
ई-मेल : jaykumarjalaj@yahoo.com

मासिक
वीर
वर्ष : 34, अंक : 7, अगस्त 2018

राष्ट्रीय पदाधिकारी

डॉ. जीवनलाल जैन–रा. अध्यक्ष
178, केशवगंज, सागर (म.प्र.) 9650766644
अनिल कुमार जैन–रा. महासचिव
ए-60, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-49
9899103774
ए. के. जैन–रा. कोषाध्यक्ष
जीवन विला, 111, दरियागंज,
नई दिल्ली-02. मो. 9312401353

प्रधान सम्पादक

प्रदीप जैन
ए-115, जोशी कॉलोनी, पटपड़गंज
आई.पी. एक्स., दिल्ली-110092
मो.: 9811469228
ankitjain235@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. वीर सागर जैन, नई दिल्ली
प्रवीन कुमार जैन, झांसी
डॉ. ज्योति जैन, खतौली
डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन, टीकमगढ़

स्वत्वाधिकारी

अ.भा. दिगम्बर जैन परिषद
नई दिल्ली

पत्र व्यवहार का पता

अ.भा. दिगम्बर जैन परिषद
परिषद भवन-दि. जैन मंदिर
पॉकेट नं. 104, कालकाजी एक्सटेंशन,
अग्रवाल धर्मशाला के साथ, नई दिल्ली-19

संचार सम्पर्क

टेलीफोन : 26215271, 26211079
वार्षिक शुल्क : 100/-, (संस्थाओं हेतु 50/-), प्रति अंक : 5/-

केन्द्रीय कार्यालय का ई-मेल

abdjparishad@gmail.com
'वीर' का ई-मेल :
mon.veer@gmail.com

नोट : लेखक के विचारों से सम्पादक एवं संस्था सहमत हो, यह आवश्यक नहीं।

सम्पादकीय

ज्वलंत प्रश्न?

हमारी संस्कृति में पाणिग्रहण संस्कार का विशेष महत्त्व है। विवाह के पूर्व युवक-युवतियों का जीवन अनियंत्रित यानि बिखरा-बिखरा सा रहता है लेकिन वैवाहिक बंधन के पश्चात पति-पत्नि संयमी-सदाचारी भाव से घर-गृहस्थी के तमाम उत्तरदायित्व निभाने में तत्पर हो जाते हैं। सर्वश्रेष्ठ दाम्पत्य जीवन तो वही है जो जिंदगी के हर उतार-चढ़ाव में एकजुट होकर एक सम बने रहते हैं। लेकिन इसके विपरीत अब स्थिति एकदम उलट होती जा रही है और यह स्थिती जैन और जैनेतर दोनों समाज के लिये चिंतनीय है।

हम यहाँ सिर्फ जैन समाज की बात करें तो आधे से अधिक नव विवाहित दंपत्तियों के बीच न सिर्फ मन-मुटाव बढ़ रहा है बल्कि तलाक जैसी घटनायें भी दिनों दिन बढ़ रही हैं। प्रश्न ये है कि ऐसा क्यों हो रहा है?

दरअसल आधुनिक होते हुये समय के साथ-साथ विवाह के स्वरूप और रीति-रिवाजों में बहुत हद तक विभिन्नता आनें लगी हैं। धार्मिक-दृष्टि से भी हमारी जैन समाज में पाणिग्रहण संस्कार सिर्फ और सिर्फ दिखावा, धन-वैभव का प्रदर्शन और दूसरे समाज में व्याप्त कुरीतियों को ग्रहण करने मात्र तक सीमित रह गया है।

अधिक नहीं महज चार दशक पहले तक पाणिग्रहण संस्कार कराने वाले विद्वान (पंडित) पूरे मनोयोग से धार्मिकता का ध्यान रखते हुये सभी वैवाहिक क्रियायें अधिकांश दिन में ही संपन्न कराते थे और फलस्वरूप विवाह में बंधकर 'पति-पत्नी अगले सात जन्म तक बंधे रहने की भावना मन में बांधकर रखते थे। लेकिन अब न तो वर-वधू और न ही उनके माता-पिता और परिजन वैवाहिक क्रियाओं में होने वाले शुद्ध संस्कारों का ध्यान रखना चाहते हैं।

पाणिग्रह संस्कार संपन्न कराने वाले जैन विद्वान और पंडित भी पूर्णत: व्यावसायिकता को ध्यान में रखकर ही सभी क्रियायें संपन्न करा देते हैं।

मैं **जैन विद्वानों** और **पंडितों** के समक्ष यहाँ एक प्रश्न रखना चाहता हूँ और उनका जो भी उत्तर होगा उसे हम 'वीर' में प्रकाशित भी करेंगे।

प्रश्न यह है कि रात्रि में संपन्न कराये जाने वाले विवाह संस्कार क्या उचित हैं? रात्रि में जिनवाणी माँ विराजमान करना क्या उचित है? जहाँ जिनवाणी विराजमान हैं वहाँ रात्रि भोजन क्या उचित है? पाणिग्रहण संस्कार संपन्न होने वाली जगह पर अस्थाई वेदी के आस-पास जूते-चप्पल उतारकर हर तरह का मनो विनोद करना और दूध-चाय-कॉफी के साथ स्वल्पाहार लेना क्या उचित है? और सबसे गंभीर प्रश्न यह है कि जैन विद्वान और पंडित द्वारा रात्रि में अष्ट द्रव्य से पूजन और अर्घ अर्पण कराना क्या जिनेन्द्र प्रभु की अविनय नहीं है।

मुझे विश्वास है कि रात्रि में विवाह संपन्न कराने वाले जैन विद्वान और पंडित वर्ग हमारे इन प्रश्नों के उत्तर अवश्य देंगे।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का तो प्रमुख उद्देश्य ही है या यूँ कहूँ कि नारा- **'दिन में भोजन दिन में फेरे'**। मैं संपूर्ण जैन समाज के साथ-साथ परिषद् के सक्रिय पदाधिकारियों और सदस्यों से भी अनुरोध करना चाहता हूँ कि अब तक जो हुआ सो हुआ अब आगे सिर्फ इस नारे को ही बुलंद न करें बल्कि अपने परिवार में भी होने वाले वैवाहिक कार्यक्रम दिन में ही संपन्न करायें।

प्रदीप जैन

अनुक्रम

सम्पादकीय	3
अमूल्य उपहारों से....	5
मूलाचार से.....	8
शिष्य को स्व....	10
वीर के पूर्व.....	13
शिथिलाचार के.....	15
जिनप्रतिमा के.....	16
जैन विवाह का.....	17
जैनागम में.....	18
श्री जिन मंदिर जी....	19
क्या जिनप्रतिमा.....	20
दिगम्बर जैन.....	21
समाचार	22

परिषद का सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक रु. 51,000/-
परम संरक्षक रु. 31,000/-
विशिष्ट संरक्षक रु. 21,000/-
संरक्षक सदस्य रु. 15,000/-
विशिष्ट सदस्य रु. 5,100/-
आजीवन सदस्य रु. 2,100/-
आजीवन सदस्य रु. 1,100/-

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक, विशिष्ट संरक्षक, संरक्षक व विशिष्ट सदस्यों को आजीवन सदस्य (2100/-) को 12 वर्ष तक तथा (1100/-) को 6 वर्ष तक 'वीर' पत्रिका नि:शुल्क भेजी जाती है।)

विज्ञापन दरें (नियमित अंक)

मुख्य आवरण (प्रथम पृष्ठ)	11,000/-
3/4 बहुरंगी (अंतिम पृष्ठ)	10,000/-
बहुरंगी/पूरा पृष्ठ आवरण (2 या 3 पृष्ठ)	7,500/-
अंतिम आवरण (दो रंग) आवरण (2, 3 या 4 पृष्ठ)	6,000/-
पूरा पृष्ठ/दो रंग में अथवा चिकना पृष्ठ (आर्ट पेपर)	5,000/-
साधारण पृष्ठ (पूरा)	3,500/-
साधारण पृष्ठ (आधा)	2,000/-
साधारण पृष्ठ (एक तिहाई)	1,500/-
साधारण पृष्ठ (एक चौथाई)	1,000/-
शुभकामना संदेश (प्रति कॉलम)	500/-

हार्दिक शुभकामनाएं

शेखर जैन

(अध्यक्ष, अ.भा.दि. जैन परिषद, हरियाणा प्रदेश)

जैना कन्स्ट्रक्शन कं.

जे.सी.सी. इन्फ्राटेक प्रा. लि.

हाउस नं. 1474, सेक्टर-15, पार्ट-2, गुड़गांव-122001 (हरि.)

हार्दिक शुभकामनाएं

सतीश कुमार जैन

(अध्यक्ष, अ.भा.दि. जैन परिषद, उत्तराखण्ड प्रदेश)

जैन पेट्रोल पम्प के पीछे, रेलवे रोड,
ज्वालापुर - 249407, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

डॉ. जीवनलाल जैन

उपाध्यक्ष, अ. भा. दि. जैन परिषद्

जीवन हर्बल प्रॉडक्ट्स

जैविक पद्धति से उत्पादित शुद्ध जड़ी–बूटियों से शास्त्रोक्त
एवं अहिंसक विधि द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक औषधियों
एवं प्रसाधन सामग्री के उत्पादों के निर्माता

प्रशासनिक कार्यालय

178, केशवगंज, सागर–470002 (म.प्र.)
फोन : 233049, 233503
फैक्स : (07582) 233853
मो.: 9425171285, 9425170978

मार्केटिंग ऑफिस

बी–39, विवेक विहार, फेस–1,
दिल्ली–110095
फोन : 011–22162531
मो.: 9650766644

उत्पादन इकाई

बम्होरी रेंगुआ, भोपाल रोड, सागर (म.प्र.)

Website : www.jeevanherbs.com | E-mail : jeevanherbs@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाएं

विनोद कुमार जैन

(केन्द्रीय उपाध्यक्ष, अ.भा.दि. जैन परिषद)

बी-5, बहादुर अपार्टमेंट नं. 9, राजनारायण रोड,
सिविल लाइन्स, दिल्ली - 110054
मो. : 99714 66110

चातुर्मास स्थापना पर विशेषः

अमूल्य उपहारों से युक्त आत्म साधना का पर्व चातुर्मास

-भावलिंगी संत श्रमणाचार्य विमर्शसागर मुनि

अहा! भरत के भारतदेश की पवित्र भूमि पर विचरण करते परम वीतरागी दिगम्बर श्रमण-श्रमणियों, उत्कृष्ट श्रावक-श्राविकाओं, अरिहन्त मत में दृढ़ श्रद्धा रखने वाले जिनोपासक-श्रमणोपासकों एवं सद् गृहस्थों के द्वारा परम अहिंसा धर्म का शंखनाद सदा से होता आ रहा है। सभी "परस्परोग्रहो जीवानाम्" सूत्र सूक्ति को चरितार्थ करते हुये 'हम सम्यग्दृष्टि है' ऐसी अनुभूति करते हैं। राग-द्वेष, बैर-विरोध, छल-ईर्ष्या से रहित निर्मल आत्मगुणों की उपासना करना ही मनुष्य जीवन का सार है।

चातुर्मास निश्चय-व्यवहार अहिंसा के पथ पर सतत् गतिमान निर्ग्रन्थ वीतराग श्रमणों के लिए विशिष्ट आत्मसाधना का अभिनन्दनीय अवसर है।

आशा है सर्वत्र 'गुण ग्राहकता' की भावना करते हुए सभी जिनशासन की छवि को उज्जवल रखने में अपनी भूमिका का निर्वाह करेंगे।

चातुर्मास के अनुपम उपहार

1. गुरु पूर्णिमा-

परमगुरु तीर्थंकर महावीर और शिष्य इन्द्रभूति गौतम का समवसरण सभा में मिलन ही जैन परंपरा में 'गुरु पूर्णिमा' है। इस दिन सभी शिष्यगण अपने परम उपकारी गुरु के उपकारों का स्मरण कर श्रद्धा भक्ति व्यक्त करते हैं।

वर्तमान में गुरु पूर्णिमा पर्व के अवसर पर श्रावक एवं श्रमण कुछ ऐसा संकल्प करें जिससे जैन समाज में वात्सल्य बढ़े और सच्चे जैनधर्म की रक्षा हो।

* श्रावक एवं विद्वान् जातिवाद, पंथवाद एवं ख्यातिलाभ के लिए पनप रहे संतवाद को बढ़ावा न देकर पीछी-कमंडलुधारी निर्ग्रंथ जिनमुद्रा की श्रद्धा-भक्ति करके अपना कर्त्तव्य निर्वाह करें। कदाचित् सम्यग्दर्शन का स्वयं परिचय देते हुये स्थितिकरण अंग का पालन भी करें। किंतु जिनमुद्रा का कभी अनादर या निंदा न करें।

* निर्ग्रंथ वीतरागी साधुजन मूलाचार कथित समाचार विधि का पालन करते हुये उपसंपत गुण का परिचय दें। उपसंपत् के पाँच भेद हैं। जिसमें विनयोपसंपत् गुण का वर्णन करते आचार्य भगवन् कहते हैं- 'अन्य संघ से विहार करते हुये आये मुनि को पादोष्ण या अतिथि मुनि कहते हैं। उनका विनय करना, आसन आदि देना, उनका अंगमर्दन करना, प्रिय वचन बोलना आदि।

आप किन आचार्य के शिष्य हैं? किस मार्ग से विहार करते हुये आये हैं, ऐसा प्रश्न करना। उन्हें तृण संस्तर, फलक संस्तर, पुस्तक, पिच्छिका आदि देना, उनके अनुकूल आचरण करना तथा उन्हें संघ में स्वीकारना विनयोपसंत है।

मूलाचार कथित विनयोपसंपत् गुण का पालन कर श्रमण संघ वात्सल्य अंग का परिचय दें जिससे 'जीव मात्र का कल्याण हो' ऐसा जिनोपदेश सार्थक हो सके।

जो विद्वान एवं श्रमण ऐसा नहीं करते वे जिनशासन को मलिन करते हैं, कहा भी है

पण्डितैर्भ्रष्टचारित्रैर्बठरैश्च तपोधनैः।
शासनं जिनचन्द्रस्य निर्मलं मलिनीकृतम्॥

अर्थात् 'चारित्रभ्रष्ट पण्डितों ने और बनावटी तपस्वियों ने जिनचन्द्र के निर्मल शासन को मलिन कर दिया'।

गुरु पूर्णिमा साधु मिलन का पर्व है। आओ हम सब गुरु पूर्णिमा के भाव को जिनाज्ञा का पालन कर सार्थक करें।

2. वीर शासन जयंती-

भगवान महावीर की समवसरण सभा में खिरनेवाली दिव्यध्वनि आज हम सभी के समक्ष 'जिनागम-जिनवाणी' के रूप में प्राप्त है। सभी श्रमण एवं श्रावक आगम के अनुसार चर्या करें ऐसी पूर्वाचार्य भगवंतों की आज्ञा है। यही 'वीर शासन' की परिपालना है। श्रावण बदी एकम् 'वीर शासन जयंती' के रूप में विख्यात है।

आओ हम सभी आगम की आज्ञा का पालन कर, आगमानुसार चर्या कर 'वीर शासन' के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धा व्यक्त करें। कहा भी है-

जिनश्रुत तदाधारौ तीर्थं द्वावेव तत्त्वतः।
संसारस्तीर्यते तत्सेवी तीर्थसेवकः।।

अर्थात् 'जिनागम और जिनागम के ज्ञाता गुरु वास्तव में दो ही तीर्थ हैं क्योंकि उन्हीं के द्वारा संसाररूपी समुद्र तिरा जाता है। उनका सेवक ही तीर्थ सेवक है।'

3. पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस (बैर पर क्षमा की विजय)-

चातुर्मास काल में श्रावण शुक्ल सप्तमी का दिवस मुकुट सप्तमी के रूप में मनाया जाता है। इस दिन तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ स्वामी को निर्वाण प्राप्त हुआ। आज के दिन भगवान पार्श्वनाथ की क्षमा और कमठ के बैर का स्मरण सहज ही हो जाता है। जो प्रत्येक श्रावक और श्रमण के लिए प्रेरणादायी है। सोचें, क्षमा का फल प्राप्त करना है या बैर का। कहीं-कहीं श्रमण-श्रमण, श्रावक-श्रावक, श्रमण-श्रावक, श्रावक-श्रमण के बीच क्षमा भाव न होकर बैर भाव देखा जा रहा है। आज के दिन सोचें इसका दुष्परिणाम क्या होगा। अतः उत्तम क्षमा भाव को धारण कर पार्श्वनाथ प्रभु की तरह उत्तम फल प्राप्ति का पुरुषार्थ करें।

4. रक्षाबंधन दिवस (श्रमण वात्सल्य का अनुपम उदाहरण)-

आगमानुसार चर्या का पालन करने वाले आचार्य अकंपन स्वामी के संघ पर घोर उपसर्ग जान मुनि विष्णुकुमार ने अपनी श्रेष्ठ साधना के फल से प्राप्त विक्रिया ऋद्धि के द्वारा उपसर्ग दूर कर परस्पर साधु वात्सल्य का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। जो वर्तमान में श्रमण संघ एवं श्रावकों के लिए प्रेरणास्पद है।

* आज वीतरागी श्रमणों का रक्षाबंधन पर्व के वीतराग भाव को छोड़कर सरागभाव में स्थित होना आश्चर्य पैदा करता है। जब तिल-तुष मात्र परिग्रह से रहित आत्मस्वभाव में रमणता की भावना करने वाले साधुजनों के संयमोपकरण पिच्छिका में लाखों रूपयों की बोली लगाकर सोने, चांदी की राखी बांधी जाती है और साधुजन हर्ष के साथ बहिनों ने राखी बांधी ऐसे सराग भाव में जा गिरते हैं।

आशा करते हैं, चातुर्मास में चतुर्विध श्रमण संघ इस ख्याति-पूजा की भावना को छोड़कर अपने वीतराग स्वभाव की रक्षा करेंगे और महा परिग्रह के बढ़ते शिथिलाचार को दूर करेंगे।

5. राष्ट्र पर्व गणतन्त्र दिवस-

प्राणी मात्र के हित की भावना से साधुजन 'राष्ट्र के नाम संदेश' में सदाचार का उपदेश प्रदान करें। जैसे-

1. मैं चाहता हूँ, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती भरत का यह भारतदेश सदा खुशहाल, संपन्न और समृद्ध रहे।
2. भारतदेश में भौतिक समृद्धि के साथ आध्यात्मिक समृद्धि का भी सदा स्वागत हो।
3. भारत देश का हर नौजवान हिंसा को छोड़ अहिंसा में विश्वास रखे और विश्वभर में अहिंसा की अलख जगाये।
4. भारत की नारी शक्ति सीता, अंजना, चंदनबाला को आदर्श मानकर आगे बढ़े जिससे नारी, स्वाभिमान के साथ सम्मानपूर्वक जीना सीख सके।
5. भारतदेश में कभी भ्रूण हत्या न हो। कन्या भ्रूण हत्या विकलांग चिंतन की उपज है जो सर्वथा अनैतिक है साथ ही ब्रह्म हत्या की दोषी।
6. भारतदेश की युवाशक्ति नशीली चीजें गुटखा, शराब, सिगरेट, ड्रग्स तथा व्यसनों से दूर शाकाहार, योग तथा माता-पिता की सेवा को कर्त्तव्य समझें।
7. भारतदेश का प्रत्येक वर्ग साधु, शिक्षक, राजनेता, सैनिक, पुलिस, छात्र-छात्राएँ एवं सामाजिक संगठन सभी कर्त्तव्यनिष्ठ बनें और अपनी मर्यादा में रहते हुये कर्त्तव्य का पालन करें।
8. भारतदेश का नागरिक समृद्ध बने। शादी में धन का अपव्यय न करें, शादी में लाखों का खर्च, किसी चिकित्सा, शिक्षा, सामाजिक-धार्मिक क्षेत्र में लगाकर खुशियाँ चिर स्थायी करें। इत्यादि।

6. दशलक्षण पर्व-

चातुर्मास में दशलक्षण पर्व का विशिष्ट महत्व है। श्रमण संघ दस धर्मों की व्याख्या कर श्रावकों को धर्मपूर्वक जीने की कला सिखाते हैं। सांस्कृतिक गतिविधियों के द्वारा आबाल-वृद्ध अपना विकास करते हैं एवं धर्म की महत्ता से परिचित होते हैं। दशलक्षण धर्म आत्मोत्कर्ष के सोपान है।

7. क्षमावाणी पर्व-

दशलक्षण धर्म का पालन करने वाले श्रमण एवं श्रावक वर्ग क्षमावाणी पर्व के माध्यम से जीवमात्र से क्षमायाचना कर आत्मा को शुद्ध करते हैं। आज के दिन एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय पर्यन्त जीवों से सरलभाव से अपने ज्ञात-अज्ञात दोषों के प्रति क्षमाभाव अनुभवकर निर्दोष आत्मा बनाते हैं।

* चातुर्मास में श्रमण संघ एवं श्रावकगण सब भेदभाव त्यागकर एक मंच पर आसीन हो क्षमावाणी आत्मा से मनायें। कहीं ऐसा न हो कि उत्तम क्षमाधर्म के पालक साधु एक मंच पर आने से ही मना कर दें और क्षमावाणी पर्व एक कोरा अभिनय मात्र बनके रह जाये। प्रवचन क्षमावाणी के और आचरण बैरभाव का। जिनमुद्राधारी साधु जरूर ही क्षमावाणी पर्व को निष्कषाय भाव से मनायेंगे ऐसी आशा करते हैं।

8. धनतेरस एवं दीपावली पर्व-

चतुर्विध संघ एवं सद् गृहस्थ श्रावक इन दिनों में भगवान महावीर के संसार मुक्ति फल का चिंतन कर सद्मार्ग-मोक्षमार्ग को सफल करने की भावना करें। भगवान महावीर परिनिर्वाण दिवस हमें संसार में रागद्वेष के बंधनों से छूटकर वीतराग भाव में स्थित हो पूर्ण आत्मस्वभाव की प्राप्ति की प्रेरणा देता है।

चातुर्मास के मध्य में अन्य सम्यक् धर्म प्रभावना के आयोजन आयोजित कर जिनशासन का गौरव बढ़ाये। सद्गृहस्थ श्रावक, श्रमण संघ के सानिध्य में जिनदेव-जिनागम-जिनमुद्राधारी गुरु के प्रति श्रद्धावान बनें। श्रमण संघ वात्सल्यभाव से मिलें और सम्यग्दर्शन के आठ अंग आचरण में आयें तभी चातुर्मास के विशिष्ट क्षण अभिनंदनीय हो सकते हैं और भगवान महावीर के शासन की निर्मल प्रभावना सर्वत्र गुंजायमान हो सकती है।

आओ, इस चातुर्मास में हम सभी श्रमण संघ जिनशासन के गौरव को बढ़ाये और ऋण मुक्त हों। "जैनम् जयतु शासनम्"।

BioChemPhy

जय एप्लायन्सेज एण्ड इंस्ट्रूमेंट्स कं.

प्रयोगशालाओं की समस्त प्रकार की विज्ञान सामग्री के विक्रेता

196, जवाहरगंज, सागर (म.प्र.) फोन : 07582-243241, 403241
मो.: 9425171674, 9827284841, 9977080080, 9926143241
ई-मेल : jaicosagar@gmail.com वेबसाईट : www.bichemphy.com

कमल चौधरी
प्रांतीय मंत्री-अ.भा.दि. जैन परिषद्, सागर (म.प्र.)
श्रीमती सुधा चौधरी
अध्यक्ष-अ.भा.दि. जैन परिषद्, "श्री शांतिनाथ शाखा" सागर (म.प्र.)
अनुराग चौधरी
दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप "अनुभूति", सागर (म.प्र.)
अमित चौधरी
मंत्री-जैन मिलन मुख्य शाखा, सागर (म.प्र.)

हार्दिक शुभकामनाएं

देवेन्द्र कुमार (सिंघई) जैन
प्रांतीय उपाध्यक्ष
अ. भा. दि. जैन परिषद्, म.प्र.

शकुन्तला जैन
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
अ. भा. दि. जैन परिषद्, म.प्र.

सर्वोदय बिल्डर्स बीना

दीपशिखा विजय टाकीज रोड,
मोती नगर वार्ड, सागर (म.प्र.)
मो. : 9407590586, 9893662299

संयम स्वर्ण वर्ष के समापन पर विशेषः

मूलाचार से परिपूर्ण संत आचार्य श्री विद्यासागर जी

-डॉ. नरेंद्र जैन भारती

भारतवर्ष की दिगंबर श्रमण परंपरा में संत साधना का विशेष महत्व है। संत वे हैं जो विकृति से दूर रहकर प्रकृति में विचरण करते हैं। आत्म प्रकृति उन्हें रुचिकर लगती हैं। ज्ञान, ध्यान और तप में लीन रहना साधु की प्रकृति है क्योंकि इससे आत्म सौंदर्य बढ़ता है, चारित्र की प्रधानता दृष्टिगोचर होती है तथा संपूर्ण देश उनके प्रति श्रद्धा का भाव रखकर नतमस्तक होता है।

दिगंबर जैन मुनियों के दैनिक जीवन की एक कार्य-पद्धति सुनिश्चित है। आचार्य कुंदकुंद स्वामी ने श्रमणों का जो स्वरूप निरूपित किया है वही आज भी सर्वमान्य है। **'श्रमण्यन्त्यात्मानं तपोभिरिति श्रमणः'** (मूलाचार (वृत्ति) अर्थात् जो तप से अपनी आत्मा को श्रमयुक्त करता है वह श्रमण है।

'श्राम्यति मोक्षमार्गे श्रमं विदधातीति श्रमणः' अर्थात् जो मोक्षमार्ग में श्रम करता है वह श्रमण है। मूलाचार के अनुसार साधु को श्रमण, ऋषि, मुनि, साध, वीतराग, अनगार, भदंत, दांत और यति नाम से जाना जाता है। भारतीय संस्कृति में इन श्रमणों की महिमा बताई गई है। रत्नकरंड श्रावकाचार में समंतभद्राचार्य ने कहा है-

विषयाशावशातीतो निरारम्भोपरिग्रहः।
ज्ञानध्यान तपो रक्तः तपस्वी सः प्रशस्यते॥

अर्थात् जो विषयों की आशा से रहित हैं, आरंभ और परिग्रह से रहित हैं तथा ज्ञान, ध्यान और तप से लीन रहते हैं। वे साधु प्रशंसनीय हैं। साधुओं में आचार्य, उपाध्याय और साधु हैं। साधुओं को निर्दोष साधना में लगाए रखना आचार्य की प्रमुख जिम्मेदारी होती है। वृहद द्रव्य संग्रह में नेमिचंद्राचार्य कहते हैं-

दंसण णाण पहाणे वीरिय चारित्तवर तवायारे।
अप्पं परं च जुंजईसो आइरिओ मुणि झेओ॥

अर्थात् जो दर्शनाचार, ज्ञानाचार की मुख्यता सहित वीर्याचार, चारित्राचार और तपाचार इन पाँच आचारों में जो अपने-अपने तथा पर को जोड़ते हैं वह आचार्य, मुनि ध्यान के योग्य हैं।

आचार पंचविहं चरदि जो णिरदिचारं।
उवसदि च आचारं एसो आयारव णाम॥

जो मुनि पाँच प्रकार के आचार निरतिचार स्वयं पालते हैं जो दूसरों को भी इसमें प्रवृत्त कराते हैं तथा आचार का शिष्यों को भी उपदेश देते हैं उन्हें आचार्य कहते हैं। आचार्य परमेष्ठी सभी साधुओं को 28 मूलगुणों का पालन कराते हैं तथा स्वयं बारह तप, दशधर्म, पंचाचार षट् आवश्यक तीन गुप्ति इस प्रकार 36 गुणों का पालन कराते हैं। अतः सर्वोच्च महामानव कहलाते हैं।

परमपूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज आज ऐसे संत हैं जिनकी चर्या पर आज कोई उंगली नहीं उठा सकता। वे अपनी अनुपम साधना तप, त्याग और उदारता के कारण लोकप्रियता के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान आचार्य हैं।

शरद पूर्णिमा आश्विन शुक्ल 15, दिनांक 10 अक्टूबर को कर्नाटक प्रांत के बेलगाँव जिले के सदलगा ग्राम में श्री मल्लपा जी के घर माता श्रीमती जी की कुक्षी से जन्में बालक विद्याधर ने आचार्य श्री ज्ञानसागर जी से मुनि दीक्षा ग्रहण कर पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे आगे बढ़ते रहे और जनसमुदाय उनके उच्च कद को निर्विवाद रूप से देखता रहा। जब संपूर्ण देश में मुनि विरोधी वातावरण बनाया जा रहा था, एकांतवाद को लेकर वाद-विवाद चल रहे थे, ऐसे समय में एक ऐसे युगीन महापुरुष की आवश्यकता थी जो अपने त्याग और तपस्या के माध्यम से यह दिग्दर्शन करा सके कि 'वर्तमान में भी सच्चे निर्ग्रंथ साधु संभव हैं।' आचार्य विद्यासागर महाराज ने संपूर्ण जनमानस के सपनों को साकार किया और आज भी स्वकल्याण में रत रहते हुए लगभग 329 साधु-साध्वियों को आत्मसाधना में संलग्न किए हुए हैं। ये साधु अपने गुरुवर को नित्यप्रति भक्ति प्रदर्शित करते हुए यही भावना भाते हैं कि युगों-युगों तक जब तक मेरा आत्मकल्याण न हो जाए तब तक आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जैसे गुरुवर का मार्गदर्शन मिलता रहे।

उनकी तपस्या से प्रभावित, अप्रभावित साधुगण भी उनकी प्रशंसा करते हैं क्योंकि उनके पास मात्र पीछी कमंडलु और स्वाध्यायार्थ शास्त्र ही मिलते हैं। हीटर, कूलर, पंखे, वाहनादि से दूर रहकर उन्होंने दुनिया को दिखा दिया कि दिगंबर मुनियों के लिए आज भी 22 परीषह सहन करके तपस्या करनी

जरूरी है ताकि शरीर के प्रति उनका निर्ममत्व भाव बना रहे। आपके द्वारा दीक्षित समस्त साधु वर्ग आचार्यश्री की चर्या के अनुसार ही धर्म मार्ग पर चल रहे हैं।

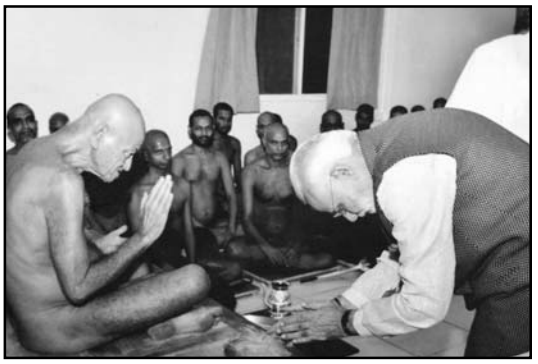

आचार्यश्री के व्यक्तित्व और कृतित्व से राजनेता भी प्रभावित हैं। यही कारण है कि सनातन धर्म में आस्थावान पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने सन् 2003 में उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया। पूर्व उपराष्ट्रपति **भैरोंसिंह शेखावत,** लोकसभा स्पीकर **सुमित्रा महाजन,** मुख्यमंत्री **शिवराज सिंह चौहान,** मुख्यमंत्री **रमण सिंह** सहित अनेक नेताओं के साथ-साथ 2016 में भोपाल में चातुर्मास के दौरान वर्तमान प्रधानमंत्री **श्री नरेंद्र मोदी** ने जब आपके दर्शन किए तब आपने गौहत्या सहित जीव-हिंसा रोकने पर चर्चा की। आचार्यश्री स्वकल्याणक को तो सर्वोच्च प्राथमिकता दे ही रहे हैं, देशवासियों को भी उनके कर्तव्यों की याद दिला रहे हैं।

शिक्षा और संस्कृति की रक्षा के लिए आपने बताया कि शिक्षा ऐसी ही होनी चाहिए जो व्यवसाय के साथ संस्कार भी दे सके। संस्कार ही मानव जीवन में मानवता का दिग्दर्शन कराते हैं। उन्होंने हमेशा अपने प्रवचनों में युवा पीढ़ी को प्रेरित किया कि उन्हें अपनी मातृभाषा को अपनाना चाहिए, लेकिन राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए सभी को एक सूत्र में बाँधने वाली हिंदी को भी स्वीकार करना चाहिए। विदेशी भाषाओं का ही परिणाम है कि हम अध्यात्मवादी की जगह भोगवादी बन गए हैं। **'इंडिया नहीं भारत बोलो'** की उनकी प्रेरणा भाषायी एकता, प्रेम और मातृत्व भाव को बढ़ावा देती है। आपने स्वावलंबी बनने के लिए आपने कम पूँजी की लागत वाले हथकरघा उद्योग लगाने की प्रेरणा दी, जो अहिंसात्मक तरीके से रोजगार का एक साधन है।

जैन साधुओं में एकमात्र आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ही ऐसे विरले संत हैं जिनकी साधना की सभी आराधना करते हैं। 30 जून, 1968 को मुनिदीक्षा (आषाढ़ कृष्ण 5 वि.स. 2025) लेने के बाद उन्होंने दिगंबर परंपरा का जो आदर्श उपस्थित किया, वह अवर्णनीय है। श्रेष्ठ श्रमणत्व को अंगीकार करने के साथ-साथ युवाओं में भी श्रमण जीवन के प्रति उन्होंने आस्था जगाई। जिसके कारण अनेक युवाओं ने भरपूर जवानी में गृहस्थ जीवन का त्याग कर मुनि दीक्षा धारण कर त्यागमार्ग अंगीकार किया। आचार्य विद्यासागर जी महाराज श्रेष्ठ गुरु के श्रेष्ठ शिष्य निरूपित हुए हैं।

विनम्र श्रद्धांजलि

दूरदर्शन के लिए 26 नामचीन कवि, गीतकार, और ग़ज़ल गो पर संगीतमयी धारावाहिक "गूंजते स्वर" निर्मित करने का हमें सौभाग्य मिला था; इन रचनाकारों में गीतों के सरताज आदरणीय नीरज जी प्रमुख थे।

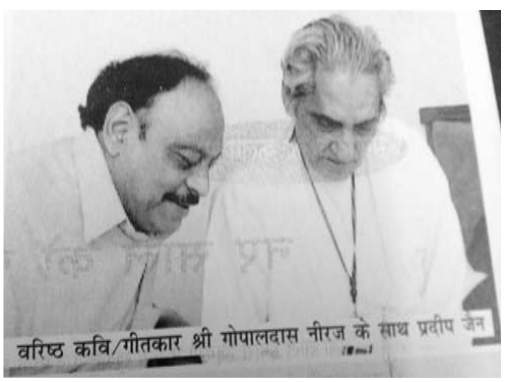

वरिष्ठ कवि/गीतकार श्री गोपालदास नीरज के साथ प्रदीप जैन

आज उनके जाने पर शूटिंग के दौरान मिला उनका स्नेह और तहेदिल से मिला आशीर्वाद रह रह कर याद आ रहा है।

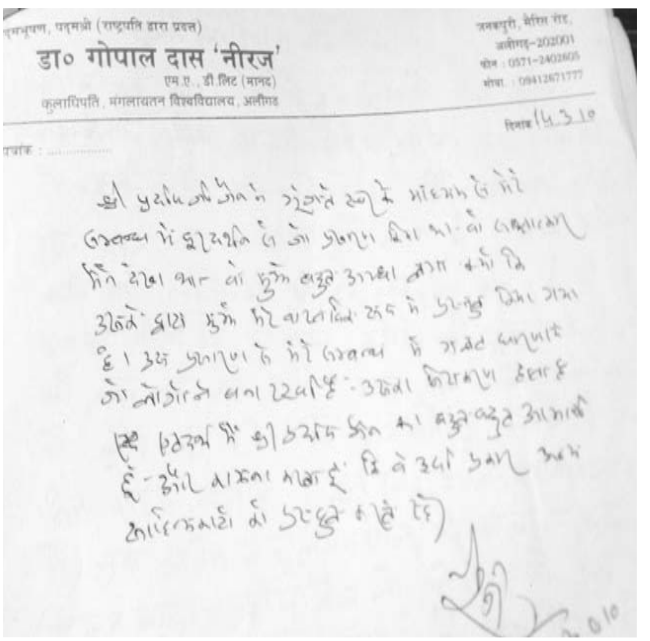

डा० गोपाल दास 'नीरज'
एम.ए., डी.लिट (मानद)
कुलापिपति, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ

गुरु पूर्णिमा पर विशेषः

शिष्य को स्व सम बनाने का नाम है गुरु

-मुनि प्रमाण सागर

गुरु ही हैं प्रकाश के वाहक

सघन अन्धकार में यदि कहीं से प्रकाश की एक छोटी सी भी किरण मिले तो वह हमारा पथ प्रदर्शन कर देती है। उसके आलोक में हम मार्ग को देखकर अपने मुकाम तक पहुंच सकते हैं। जिस व्यक्ति ने अन्धकार को भोगा हैं उसे प्रकाश और प्रकाश की किरण दिखाने वाले की महिमा मालूम है। यह सच है कि अन्धकार से निजात पाने के लिये केवल प्रकाश ही सहारा है। बल्कि प्रकाश के माध्यम से ही हम अंधकार से मुक्ति पा सकते हैं। बाहर के अन्धकार को दूर करने के लिये हमारे पास स्रोत हैं, और हम उनका उपयोग कर अन्धकार को दूर भगा देते हैं।

संत कहते हैं कि बाहर का अन्धकार तो ज्यादा से ज्यादा 12 घंटे का होता है और उसे दूर करने के लिये ज्यादा कुछ प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं होती। हमारे पास पर्याप्त साधन हैं। हम थोड़े से प्रयास से उस अंधकार को दूर करने में समर्थ हो जाते हैं मगर हमारे भीतर का जो अंधकार है वह बड़ा प्रगाढ़ अन्धकार है, जिसमें हमें कुछ सूझता नहीं। हर व्यक्ति के चित्त में अज्ञान, मोह, मिथ्यात्व का सघन अंधकार छाया है। उस अन्धकार में हमारी बुद्धि भी अंधी हो चली है। ऐसे घने अंधकार के आवरण में ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले यदि कोई हैं तो वे हैं हमारे सद्गुरु, जो अपने ज्ञान के प्रकाश से हमारे भीतर के तमस को छांटते हैं और हमारे भीतर सम्यक्त्व की रोशनी जगाते हैं। उन गुरु की भूमिका मोक्षमार्ग में बड़ी महत्त्वपूर्ण है। इसलिये हम कहते हैं।

अज्ञानतिमिरान्धानां ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

-मंगलाचरण

जो हमें रास्ता दिखायें, मार्ग दिखायें, पथ दें, जो हमारे भीतर के अंधकार को दूर करें उनका नाम है गुरु और बिना गुरु के हम अपने आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत नहीं कर सकते हैं।

गुरु में समाये हैं सारे देव

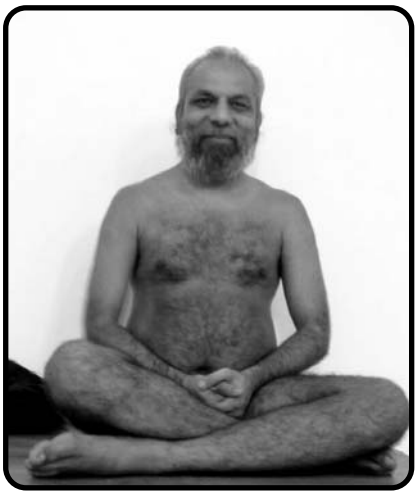

संत कहते हैं, उसी व्यक्ति का आध्यात्मिक जीवन शुरू हो पाता है जिस व्यक्ति के जीवन में गुरु का योग बनता है। कहते हैं कि बिना गुरु के जीवन शुरु नहीं। जिसका कोई गुरु नहीं उसका जीवन शुरू नहीं। बिना गुरु के मार्ग दर्शन के, बिना गुरु के हस्तावलम्बन के हमारे जीवन के उद्धार की शुरूआत नहीं हो सकती। भारत की संस्कृति में गुरु को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है और कहा है-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परमब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

लोक में ब्रह्मा को महान् माना गया है, विष्णु को महत्त्व दिया गया, महेश को भी उच्च स्थान दिया गया है, लेकिन संत कहते हैं गुरु तो तीनों से ऊपर हैं। ब्रह्मा जो हमारे सृजेता हैं, विष्णु जो हमारे पालक हैं और महेश जो हमारे संहारक हैं, ये तीनों अलग-अलग विभूतियों से अलंकृत हैं। ये अलग-अलग तीन हैं लेकिन गुरु के अंदर इन तीनों का रूप एक साथ समाहित है। चूँकि गुरु हमारे नवजीवन का निर्माण करते हैं इसलिए गुरु ब्रह्मा हैं। वे हमें पाप से बचाकर सत्पथ पर लगाते हैं इसलिए गुरु विष्णु हैं और वे हमारी सारी कुप्रवृत्तियों का नाश करते हैं, इसलिए वे महेश भी हैं। इस प्रकार एक ही गुरु में तीनों के रूप समाहित हैं। यही कारण है कि हमारी संस्कृति में गुरु को उन सब से श्रेष्ठ बताया है और हमारी जैन परम्परा में तो गुरु का सर्वोच्च स्थान निरूपित करते हुए उन्हें पंच

परमेष्ठियों में स्थान दिया गया है। ये कहा गया है कि बिना सच्चे देव, शास्त्र और गुरु के आलम्बन के हमारे जीवन का उद्धार सम्भव नहीं है। सच्चा धर्मात्मा या सम्यग्दृष्टि वही है जो देव, शास्त्र और गुरु के चरणों में पूर्णतया समर्पित है। देव और शास्त्र का भी उतना ही महत्त्व है जितना गुरु का।

आज के युग में जो लाभ हम देव शास्त्र से नहीं ले सकते। वह लाभ हम सद्गुरु से ले सकते हैं। देव हमें मूक प्रेरणा देते हैं। उनकी प्रेरणा मुखर नहीं होती क्योंकि आज उनका साक्षात्कार नहीं है। हमने देवों की प्रतिमाओं को मन्दिर में भगवान के रूप में प्रतिष्ठित किया है और उनके माध्यम से हम कुछ मार्गदर्शन ले पाते हैं पर यह भी गुरुओं की ही कृपा है कि उन्होंने देवों के अभाव में हमें देवत्व की प्रतिष्ठा का मार्ग बताया है। सद्गुरु के प्रभाव से ही किसी पाषाण में भगवान की प्रतिष्ठा हो पाती है और हम उनके दर्शन और सान्निध्य का सौभाग्य अर्जित करते हैं। यदि गुरुओं ने यह मार्ग नहीं बताया होता, यह प्रतिष्ठा विधि नहीं बताई होती और गुरुओं के माध्यम से प्रतिमा में यह प्राण-प्रतिष्ठा नहीं की गई होती, तो आज हम देव दर्शन का जो सौभाग्य अर्जित कर रहे हैं, वह नहीं ले पाते। भगवान की मुद्रा से हम वह सब तो लाभ ले सकते हैं पर भगवान की प्रेरणा मूक होती है। वहाँ से हमें मार्ग के प्रति श्रद्धान तो उत्पन्न होता है लेकिन चलने का साहस और संकल्प नहीं जग पाता। शास्त्र हमें जीवन के कल्याण का मार्ग बताते हैं, आत्मोन्नति के जो सूत्र हैं वो सब शास्त्र में समाहित हैं, लेकिन वो सब मूक हैं। वे कुछ बोलते नहीं। उनकी स्थिति तो रास्ते में गडे मील के पत्थर की तरह है, जो केवल संकेत दे सकता है, कि यह रास्ता इधर जाता है। शास्त्र के माध्यम से केवल संकेत मिलता है, चलने का सामर्थ्य नहीं, साहस नहीं। हमने जान लिया कि रास्ता उस ओर जाता है लेकिन जानने मात्र से हम रास्ते पर चलने का साहस नहीं जुटा पाते।

गुरु बिन ज्ञान नहीं मिलता

कल्पना करिये कि आप कहीं भटक गये हैं और काफी भटकने के बाद आपको अपना रास्ता मिला और आप देख रहें कि आपका गन्तव्य इस स्थान से इतनी दूर पर है। पर आप आगे बढ़ नहीं पा रहे हैं। हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं। सोच रहे हैं कि पता नहीं यह रास्ता आगे कैसा है? कहीं दुर्गम घाटी तो नहीं, नदी नाले तो नहीं पड़ते हैं, घना जंगल है, जंगली जानवरों का आतंक तो नहीं, चोर लुटेरों का बसेरा तो नहीं? पता नहीं यह रास्ता कहाँ जाता है? उसी उधेड़बुन में आप खड़े हैं रास्ता जान लेने के बाद भी उस रास्ते पर चलने का साहस जागृत नहीं हो पाता। अनेक प्रकार की कुशंकाएँ मन में जन्म भी ले रही हैं। इसी बीच आपका कोई चिरपरिचित आदमी उधर से गुजरा। क्यों जी यहाँ कैसे? अमुक गांव जाना है, कभी यहाँ से गया नहीं, पता नहीं रास्ता कैसा है? अरे भैया रास्ता तो बहुत अच्छा है। मैं इसके चप्पे-चप्पे से परिचित हूँ। रास्ते में पड़ने वाले गांव के लोग बहुत सभ्य और सरल हैं। मुझे भी उसी तरफ चलना है। चाहो तो तुम मेरे साथ हो लो। इसके बाद हमारे कदम सहज ही उस ओर बढ़ जायेंगे। इसका कारण क्या है? जिस रास्ते पर लोग आते-जाते हैं उस रास्ते पर चलने में संकोच नहीं होता। जो रास्ता सुनसान होता है उस पर चलने का साहस नहीं होता। शास्त्र के माध्यम से हम सन्मार्ग को जान लेते हैं देव के माध्यम से हम सन्मार्ग का श्रद्धान तो कर लेते हैं पर उस मार्ग पर चलने का साहस नहीं होता। उस मार्ग पर चलूं तो कैसे चलूं? कहीं कोई दुर्घटना तो नहीं हो जायेगी? मन में जब शंका और सन्देह जागृत होता है तो गुरु कहते हैं कि मुझे देखो और चल पड़ो। जैसे मैं चल रहा हूँ वैसे ही तुम भी चल पड़ो। इस रास्ते में कहीं कोई बाधा नहीं, निर्बाध रूप से तुम इस पर चल सकते हो। और गुरु को देखकर इस मार्ग में चलने की प्रेरणा अपने आप जागृत हो जाती है यह गुरु की भूमिका है। जिनको देखने मात्र से जिनकी मुद्रा मात्र से हमें सन्मार्ग का बोध प्राप्त होता है। हम रोज स्तुति में पढ़ते हैं।

जग की नश्वरता का सच्चा दिग्दर्श कराने वाला है।

यहाँ मुख बिना खोले ही उपदेश मिलता है यह गुरु की भूमिका है। बिना गुरु के हमारा मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता है। यह गुरु की गरिमा है, गौरव है। गुरु को सर्वोच्च स्थान दिया है। यदि हम शास्त्र को ऐसे पढ़े तो हमारे पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता लेकिन गुरु के मुख से पढ़ने पर सुगम हो जाता है। शास्त्र को अगम समुद्र की तरह कहा गया है। समुद्र का जल खारा होता है उस पानी से अगर नहा लें तो खुजली हो जाती है और पीने में खारापन होता है, लेकिन उसी समुद्र के जल को सूर्य अपने प्रचण्ड ताप के माध्यम से वाष्पीकरण कर पुनः

बादल के माध्यम से बरसाता है तो वह तृप्ति व आह्लाद जनक हो जाता है। हम प्रेम से उसका पान करते हैं। संत कहते हैं कि यही स्थिति शास्त्र की है। शास्त्र अगम समुद्र की तरह है। उसमें यदि तुम डायरेक्ट डूबोगे तो हो सकता है कि तुम फंस जाओ, उलझ जाओ लेकिन उसी शास्त्र की वाणी को सद्गुरु जब अपने प्रभाव रूप सूर्य के माध्यम से वाष्पीकरण कर प्रवचन के माध्यम से बरसाते हैं तो वह आसान हो जाता है। आल्हाद जनक हो जाता है। यह गुरु की भूमिका है।

गुरु करते शिष्य को अपने सम

जैसे खेवटिया के बगैर नाव पार नहीं हो सकती, वैसे ही सद्गुरु के मार्गदर्शन के बिना हम इस भवसागर से पार नहीं हो सकते हैं। गुरु तो पूर्णिमा के चांद हैं, जो हमारे अन्दर ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। उन गुरु का सान्निध्य पाकर हम भी पूनम का चांद बन सकते हैं। गुरु पूनम का चांद हैं पर वह हमें दूज का चांद बनाते हैं। वह हमारे अंदर के अमावस के अज्ञान को दूर कर दूज का चांद बनाते हैं और कहते हैं कि तू एक बार दूज का चांद बन जायेगा तो पूर्णिमा का चांद तो स्वयं बन जायेगा। एक बार तेरी शुरुआत हो गयी हो गयी तो परिपूर्णता तो स्वयं हो जायेगी। उसे कोई रोक नहीं सकता है वे केवल बदी को मिटा कर सुदी करते हैं इसके बाद तुम्हारी बिगड़ी तो अपने आप सुधर जायेगी। अभी हम बदी में जीने के आदी हैं। सद्गुरु में परम करूणा/दया होती है जिससे वे हमारी दृष्टि और धारणा को परिवर्तित कर बदी को सुदी में बदल देते हैं और जिस तरह दूज के चांद का आविर्भाव होता है हमारे आत्मगुणों की एक-एक कला अपने आप बढ़ती है और पूनम का चांद प्रकट हो जाता है। उस तरफ अपनी दृष्टि होनी चाहिये। इसलिये सद्गृहस्थ के प्रमुख कर्त्तव्यों में वह दूसरे स्थान पर रखा गया। देवपूजा फिर गुरुपास्ति। गुरु की उपासना हमारा महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य है। बगैर गुरु की उपासना के हम अपने जीवन का उत्थान नहीं कर सकते। क्योंकि चिराग को जलाये बिना अंधेरे को दूर नहीं किया जा सकता। गुरु को प्रकाश का पुंज बताया गया। उसके उगते ही अज्ञान का साम्राज्य नष्ट हो जाता है। सूर्य के उगते ही सारी प्रकृति उसका अभिनन्दन करती है। सूर्य के उगते ही सारी प्रकृति में हर्ष छा जाता है। दुनिया में किसी को भी सूर्य के उगने से तकलीफ नहीं होती। केवल एक ही प्राणी है जिसे सूर्य के उगने के बाद तकलीफ होती है और दुनिया उसे उल्लू कहती है। उससे अभागा इस दुनिया में कोई नहीं है। जो प्रकाश के उपासक हैं, पुजारी हैं वे हमेशा सूर्य का अभिनन्दन करते हैं। सद्गुरु की यही परम्परा है।

गुरु शब्द का शास्त्रीय अर्थ

भारत की संस्कृति में गुरु शब्द गढ़ा गया है। बाकी दुनिया में गाइड/गॉड/टीचर तो हैं पर गुरु नहीं। गुरु शब्द अपने आप में बड़ा ही अर्थपूर्ण शब्द है। यह 'गु' और 'रु' के मेल से बना है। गु-अर्थात् गूढ़ अंधकार और रु अर्थात् रोशनी। जो हमें सघन अंधकार से प्रकाश की ओर कर दें उनका नाम सद्गुरु है। जो हमारे अज्ञान के तमस को दूर कर दे, जो सत्पथ पर चलने की प्रेरणा दे, जो सन्मार्ग पर चलने के लिये साहस से भर दे उनका नाम सद्गुरु है। उनकी महिमा अपरम्पार होती है। गुरु शब्द का अगर वर्ण विश्लेषणा करें तो उसमें 'ग' 'उ' 'र' 'उ' यह चार वर्ण हैं। चार अक्षर हैं।

ग=जो गंभीर हैं।
उ= जो उदार हैं।
र=जो रहस्य के;
उ=उद्घाटक हैं।

उनका नाम गुरु है जो साधना की गहराइयों को छू चुके हैं। जिनका हृदय उदार है, जो शिष्य की खामियों को तो दूर करते हैं पर अंदर से अपना उदार भाव भी उस पर लुटाते रहते हैं और जो आध्यात्मिकता के गूढ़ रहस्य का भी उद्घाटन करते हैं वे ही गुरु हैं।

गुरु ज्ञान, गुरु पारखी, गुरु उदार गंभीर।
औ रहस्य उद्घाटक गुरु, गुरु प्रभु की तस्वीर॥

Shree Mahaveeray Namah

NAND RATAN
Pt. Somprakash (Jyotish Maharishi)
Vaastu Maharishi, Samadhan Siromani
Jain & Aggarwal Matrimonial
Astrology, Vaastu & Pooja's etc.

Office : N-11, IInd Floor, Green Park Extn., Near Jain Mandir, New Delhi-110016
Phone : 011-26182349
Mobile : +91 9810323421
E-mail : info@nandratan.com nandratan@gmail.com
Website : www.nandratan.com,

15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस पर विशेष:

वीर के पूर्व संपादक एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी : पं. परमेष्ठीदास जैन

-डॉ. ज्योति जैन, खतौली, सहसंपादक : वीर

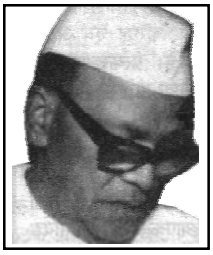

जैन समाज के सुविख्यात विद्वान् प्रसिद्ध समाज सुधारक, राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत, जैन पत्रकारिता को आधुनिकता का स्पर्श देने वाले पं. परमेष्ठीदास जैन, पुत्र-श्री मौजीलाल का जन्म 1907 में महरौनी, जिला-ललितपुर (उ.प्र.) में हुआ। आपके पिता वैद्य थे। जब पं. जी आठ वर्ष के थे तभी मौजीलाल जी ललितपुर आकर बस गये थे।

पं. जी की प्रारम्भिक शिक्षा महरौनी में हुई। बाद में ललितपुर, साढूमल, मुरैना, जबलपुर और इंदौर के जैन विद्यालयों में आपने प्राप्त की तथा 'जैन सिद्धान्तशास्त्री' और 'न्यायतीर्थ' जैसी उपाधियां प्राप्त की। डॉ. जयकुमार 'जलज' ने ठीक ही लिखा है 'बुन्देलखण्ड अपनी प्रतिभाओं को कुछ भी देने में असमर्थ था। जो भी कोई पढ़ना-लिखना और कुछकरना चाहता था उसे दिल्ली, इन्दौर, मुरैना, अहमदाबाद, सूरत, वाराणसी आदि स्थानों पर जाना पड़ता था। ये साधनहीन विद्यार्थी बहुत अल्पायु में ही घर छोड़ देते थे। स्व. गणेशप्रसाद वर्णी, इन्दौर के स्व. पं. वंशीधर, अकलतरा के स्व. पं. पन्नालाल और बाद की पीढ़ी में पं. बाबूलाल जमादार, मगनलाल जैन, पं. सुखनन्दन जैसे सैकड़ों लोग इसी प्रकार बाहर निकले थे। ये विद्वान् बीसों नगरों और कस्बों में आज आजीविका के लिए संघर्ष करते हुए भी जैन चिन्तन को गतिशील बनाये हुए हैं।

पं. परमेष्ठीदास ने भी बचपन में घर छोड़ा। पढ़ाई की। अनेक जैन ग्रन्थों का पाठ संशोधन-संपादन किया, कई मौलिक पुस्तकें लिखीं, सैकड़ों मित्र बनाये, पचासों को प्रेरणा और प्रोत्साहन दिया। संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी और गुजराती पर अपने असाधारण अधिकार के कारण उन्हें सर्वत्र आदर और आत्मीयता मिली; लेकिन वे शुद्ध उदास पण्डित कभी नहीं रहे हँसी-मजाक और नोकझोंक के बिना वे अधिक देर नहीं रह सकते। इस मामले में उनकी समानता उनके स्व. मित्र पं. नाथूराम 'प्रेमी' से की जा सकती हैं।'

पं. जी का विवाह **कमलादेवी** के साथ हुआ जो सही अर्थों में पं. जी की सहगामिनी बनीं। जब पं. जी सूरत में जेल गये तो कमलादेवी भी उनके साथ जेल गई।

मात्र 22 वर्ष की अवस्था में परमेष्ठीदास जी सूरत (गुजरात) गये और प्रसिद्ध समाचार पत्र 'जैन मित्र' के सम्पादकीय कार्यालय में सहायक बन गये, बाद में वे वर्षों तक जैनमित्र के सम्पादन से जुड़े रहे। 1932 में आपने सूरत में हिन्दी प्रचारक मण्डल की स्थापना की। जिसके अन्तर्गत सूरत में अनेक हिन्दी स्कूल चलते थे। इन स्कूलों में आप सपत्नीक नि:शुल्क पढ़ाया करते थे। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की स्थापना में भी आप सहयोगी रहे थे।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आप सूरत में गिरफ्तार कर लिये गये। **श्रीमती कमलादेवी भी सभाबन्दी कानून भंग करती हुई गिरफ्तारी कर ली गई क्योंकि वे गांधी चौक में भाषण दे रहीं थीं।** दोनों का सौभाग्य था कि दोनों को एक साथ साबरमती जेल में रखा गया। पर पण्डितानी जी बाजी मार गई उन्हें पांच माह जेल में रहना पड़ा और पं. जी को चार माह। जेल में आपके साथ आपका तीन वर्षीय पुत्र जैनेन्द्र भी था। परन्तु आपके मित्र श्री साकेरचन्द्र सरैया ने बालक को अपने पास जेल से वापिस बुला लिया और भयंकर बीमारी में भी बहुत सेवा करके उसके प्राण बचा लिये थे।

हिन्दीभाषा का प्रचार महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों में से एक महत्त्वपूर्ण कार्य था। इस कार्य में आप दोनों पूरी तन्मयता से लगे रहे। जेल में आप लगभग 500 साथियों को राष्ट्रभाषा की शिक्षा देते थे। ये सभी गुजराती थे। जेल में ही परीक्षा भी ली और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की और से प्रमाणपत्र दिलवाये।

1944 में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्र कुमार के साथ आपने 'लोक जीवन' मासिक पत्र का सम्पादन किया। **1932 से ही आप अ.भा. दि. जैन परिषद् के मुख पत्र**

'वीर' से जुड़ गये। पहले सम्पादक रहे और फिर प्रधान सम्पादक। परिषद् के 1938 में सतना तथा 1950 में दिल्ली में सम्पन्न हुए अधिवेशनों में **'मरण भोज विरोधी', 'हरिजन मंदिर प्रवेश'** प्रस्तावों को पेश करने के कारण विरोधियों की कटु आलोचना का शिकार आपको होना पड़ा था।

जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में पं. जी का नाम अग्रगण्य है। वे 'वीर' से अन्तिम समय तक जुड़े रहे, इस सन्दर्भ में **डॉ. जयकुमार 'जलज'** का संस्मरण हम यहाँ साभार दे रहे हैं- "मृत्युभोज, दस्सापूज-निषेध, दहेजप्रथा और पर्दा-प्रथा जैसी बुराइयों के विरुद्ध लोग जमकर आक्रोश व्यक्त करते थे और पं. परमेष्ठीदास इस आक्रोश के पक्ष में शास्त्रों के उद्धारण देकर इसे शास्त्र-सम्मत सिद्ध करते थे। वे जैनधर्म की उदारता को रेखांकित करते हुए सम्पूर्ण जैन वाङ्मय को प्रमाणस्वरूप रख देते थे। धीरे-धीरे रूढ़िवादियों और प्रतिगामियों ने उनके विरुद्ध गिरोह बना लिया। कुछेक सभाओं में उन्हें अपमानित करने और अदालतों में उनके पक्ष को पराजित करने की कोशिशें भी हुई। ये समाचार भी वीर में छपते और लोग इन्हें पढ़ने के लिए टूट पड़ते। पर इन समाचारों का तेवर सनसनीखेज कम ही होता था।

जैन पत्रकारों में प. परमेष्ठीदास पहले सम्पादक हैं जो लेखकों को निजी पत्र लिखते थे, रचना के लिए आग्रह करते थे और रचना-प्राप्ति पर धन्यवाद देते हुए लेखक को अपनी व्यक्तिगत प्रतिक्रिया भेजते थे। रचना के साथ वे कभी-कभी रचनाकार का परिचय और रचना का अपना आकलन भी छापते थे। सम्पादकीय व्यस्तताओं के बावजूद अपने लेखकों से एक निजी स्तर पर संवाद स्थापित कर लेना सरल नहीं था। उनके पास टाइपराइटर था, न टाइपिस्ट, न निजी सचिव। उन दिनों की अपेक्षा आज सुविधायें बढ़ गयी हैं, पर तीर्थंकर के सम्पादक को छोड़कर अन्य कोई भी जैन सम्पादक अपने लेखकों से निजी रूप में जुड़ा हुआ नहीं रहा। दिल्ली का उनका (पं. जी का) निवासस्थान वीर के कवियों, लेखकों का अड्डा बना हुआ था। उन्हीं दिनों वे एक बार ललितपुर आये थे। सुबह से शाम तक मिलने वालों का तांता लगा हुआ था। फिर जब वे ललितपुर में ही आ बसे तब भी मिलने वालों की कमी नहीं रही। किसी को उनसे नयी किताबें मिलती, किसी को पुराने चित्र, किसी को कोई बहुत पुरानी चिट्ठी। वे साठेक साल पुरानी डायरियाँ निकालते। किसी पृष्ठ पर हिसाब लिखा हुआ है, तब का जब वे इन्दौर में पढ़ते थे। वे बताते हैं- 'दूध कितना सस्ता था, यह एक पैसे की जलेबी ख़ायी थी पेट भर गया था।' जितने क्षण भी लोग उनके साथ रहते हैं उम्र की दूरियाँ भूले रहते हैं। पं. जी छोटे-छोटे पारिवारिक सुख-दुःख पूछते हैं और उन्हें याद रखते हैं। उनकी आत्मीयता दिखाऊ नहीं, सहज और भीतरी है।

वीर पाठशालावादी और परीक्षाफल-छापू अखबार नहीं था। उसके संपादक खुद स्वतंत्रता-आन्दोलन में सपत्नीक जेल जा चुके थे। वे गांधीवादी थे। अब भी खद्दर पहनते हैं। उनका पत्र उनके राष्ट्रीय विचारों का वाहक बन गया था। आजादी, देशभक्ति, गांधी, नेहरू और सुभाष पर तथा ढिल्लन, सहगल, शाहनवाज की गिरफ्तारी के विरोध जैसे विषयों पर रचनाएँ छपती थीं। राष्ट्रीय समाचारों, निर्णयों और घटनाओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता था। इनके साथ ताजे चित्र भी होते थे; लेकिन वीर राष्ट्रीय पत्र नहीं था। वह मूलतः जैन पत्र ही था। उसके सम्पादक भी मूलतः जैन सुधारवाद से सम्बन्धित थे। **एक समय महात्मा गांधी ने दिगम्बर साधुओं के नग्न विचरण पर प्रतिकूल टिप्पणी की थी। तब पं. परमेष्ठीदास उनसे मिले थे और उनके समक्ष नग्नत्व के सम्बन्ध में जैन दृष्टि को स्पष्ट किया था। परमेष्ठीदास जी के पास ये स्मृतियाँ सुरक्षित हैं- 'जैसे ही महात्मा जी ने नग्नत्व-सम्बन्धी इस दृष्टि को समझा आश्चर्य से उनका मुंह खुल गया, जीभ कुछ बाहर निकल आयी और उन्होंने सरदार (सरदार बल्लभभाई पटेल) को आवाज दी ताकि वे भी इसे समझ सकें।' बाद में गांधी जी ने अपनी प्रतिकूल टिप्पणी वावस ले ली।** स्पष्ट है कि ऐसा व्यक्ति जैन पत्र के मौलिक उद्देश्यों को त्याग नहीं सकता था। उन्होंने त्यागा भी नहीं; लेकिन एक संकीर्ण दायरे में भी उन्होंने अपने-आप को कैद नहीं होने दिया।

अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित श्रद्धेय पं. जी को 'समाजरत्न' की उपाधि से अलंकृत किया गया था। पं. जी का निधन 12 जनवरी 1978 को ललितपुर (उ.प्र.) में हुआ।

शिथिलाचार के विरुद्ध प्रस्ताव कुछ सुझाव

-डॉ. अनिल कुमार जैन, जयपुर

अ.भा.दि. जैन पत्र संपादक संघ द्वारा दि. 23-24 जून 2018 को श्री महावीर जी में आयोजित कार्यशाला बहुत अच्छी रही। शिथिलाचार के विरुद्ध एक प्रस्ताव सर्व समिति से पास किया गया। तत्पश्चात् जयपुर में भी इस प्रस्ताव को कुछ स्थानीय विद्वानों के समक्ष रखा गया तथा वह भी सर्व सम्मति से पास हुआ। जब इस प्रस्ताव को वहाट्सएप पर डाला गया तो इसके समर्थन में अनेकों पत्रकार एवं विद्वान भी सामने आ गये। सभी ने एकमत से इस प्रस्ताव को स्वीकृति दी। स्वीकृति देने वाले विद्वानों में शास्त्री परिषद् एवं विद्वत् परिषद के पदाधिकारी भी सम्मिलित हैं। यहाँ प्रश्न यह है कि क्या मात्र प्रस्ताव पास करने भर से अपना काम हो गया या उसके आगे भी बहुत कुछ करना बाकी है। यदि कुछ करना है तो क्या करना है और कैसे करना है इसकी रूपरेखा/ कार्य योजना बनानी होगी। अन्यथा इस प्रस्ताव का महत्त्व समाप्त हो जायेगा। इस तरह के प्रस्ताव पहले भी पास होते रहे हैं लेकिन बिना किसी ठोस परिणाम के बेअसर रहे।

प्राय: सभी लोग सहमत हैं कि शिथिलाचार का एक प्रमुख कारण मुनियों का एकल विहार है। अत: अब पहला कदम तो यह होना चाहिए कि एकल विहारी मुनि/आचार्य को मजबूर किया जाये कि वह अपने आचार्य या गुरु-भाई के साथ रहे। यह सही है कि इस विषय में निरन्तर लेख लिखने से कुछ माहौल बनता है। लेकिन अब वह पर्याप्त नहीं है। हमें इसके आगे जमीनी स्तर पर भी कार्य करना होगा। जहाँ एकल विहारी साधु हों वहाँ संपादकों एवं बुद्धजीवियों को उस नगर की समाज के पदाधिकारियों के साथ मीटिंग करनी चाहिए। उन्हें एकल विहारी साधुओं और उनके कारण पनप रहे शिथिलाचार के कारण होने वाली जैन धर्म की बदनामी से अवगत कराना चाहिए। समाज के अन्य प्रमुख लोगों को भी इस कार्य में शामिल करना चाहिए। समाज और मन्दिरों के पदाधिकारियों पर ही इन महाराजों की व्यवस्था का दायित्व रहता है। अत: इन पदाधिकारियों तथा नगर के प्रतिष्ठित महानुभावों को विश्वास में लेना बहुत आवश्यक है। उन्हें बिना विश्वास में लिए हम अपना उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकते हैं।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हमारी समाज में प्राय: दो ग्रुप होते हैं। यदि एक ग्रुप कदाचित् एकल विहारी को मन्दिर/धर्मशाला में न रुकवाने के लिए राजी भी हो जाय, तो दूसरा ग्रूप (वर्ग) उन एकल विहारी को रुकवाने के पक्ष में खड़ा हो जायेगा। ऐसी स्थिति में पत्रकार बन्धुओं और विद्वानों को चाहिए कि दोनों वर्गों के कुछ प्रतिष्ठित महानुभावों को अपने विश्वास में ले तथा दूसरी समाज पर यह दबाव बनायें कि हम एकल विहारी को अपने यहाँ नहीं रुकने देंगे। यह सब कार्य एक प्रकार का फील्ड वर्क है; अत: जागरुक महानुभावों को, जिनमें पत्रकार, विद्वान एवं समाज के नेता सभी सम्मलित हैं, आपस में मिल बैठकर कार्य करना होगा।

कई बार ऐसा भी देखा गया है कि एक अकेले मुनि के साथ एक या दो आर्यिका या ब्रह्मचारिणी बहन रहती हैं। अत: इन आर्यिका व ब्रह्मचारिणी बहनों को भी किसी आर्यिका संघ में सम्मिलित होने के लिए बाध्य करना चाहिए।

आम समाज को भी जागरुक करने की जरूरत है। प्राय: लोग यह कहते हुए मिल जतो हैं कि हमसे तो अच्छे हैं, नग्न हैं अत: हमारे लिए तो ये ही पूज्य हैं। उनका नग्न होना ही हमारे लिए पूज्यनीय होने के लिए पर्याप्त है। इस मानसिकता को बदलने के लिए आवश्यक है कि जागरूक बन्धु (चाहे वे पत्रकार हों या विद्वान या समाज के श्रेष्ठी व नेता) समय-समय पर मन्दिर जी में विद्वानों के प्रवचन/भाषण करायें जिसमें वे विद्वान समाज को गुरु का स्वरूप समझायें तथा एकल विहार से होने वाले नुकसान के बारे में भी बतायें।

सब जगह इस प्रकार की व्यवस्था हो जाये तो बहुत ही अच्छा रहेगा। यदि सब जगह न हो सके तो कम से कम कुछेक स्थानों पर तो इसे लागू करके देखना चाहिए। इस कार्य को एक-दो स्थानों पर पायलेट प्रोजेक्ट की तरह से भी प्रारम्भ कर सकते हैं। यदि हमारा यह पायलेट प्रोजेक्ट सफल हो जाता है तो अन्य स्थानों पर भी प्रारम्भ कर सकते हैं। जैसे कि मैंने ऊपर भी लिखा कि यह फील्ड वर्क है, अत: अब जमीनी कार्य करना होगा। चातुर्मास प्रारम्भ होने वाला है। अत: इस कार्य योजना को प्रारम्भ करने का यह सबसे अधिक उचित समय रहेगा।

यहाँ स्पष्ट कर दूँ कि एकल विहार ही शिथिलाचार का एक मात्र कारण नहीं है। अन्य दूसरे भी कारण हैं। लेकिन पहले कदम के रूप में एकल विहारी साधुओं के विरुद्ध अभियान चलना उचित रहेगा।

जिनप्रतिमा के समक्ष ही होना चाहिए विवाह

-प्रो. वीरसागर जैन

विवाह गृहस्थ जीवन का मूलाधार है। यदि वह शुभ होगा तो हमारा गृहस्थ जीवन भी शुभ होगा और यदि वह अशुभ होगा तो हमारा गृहस्थ जीवन भी अशुभ होगा। अतः इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए। शास्त्रों में भी इस पर बहुत विशेष ध्यान दिया गया है। इसे जीवन के सोलह संस्कारों में एक महत्त्वपूर्ण संस्कार के रूप में परिगणित किया है और इसके सम्पादन की पूरी विस्तृत विधि भी समझाई गई है। अतः हमें इसे यूँ ही हल्का-फुल्का नहीं समझना चाहिए, बल्कि बहुत ही गम्भीरता से लेना चाहिए। आजकल लोग इस पर विशेष ध्यान नहीं देते हैं, जैसे-तैसे सम्पन्न कर लेते हैं, इसीलिए आज लोगों का वैवाहिक जीवन बहुत समस्याग्रस्त होता जा रहा है, बड़ी संख्या में तलाक तक हो रहे हैं।

शास्त्रों के अनुसार विवाह की यह क्रिया बड़ी ही पवित्रता के साथ जिनप्रतिमा के समक्ष होनी चाहिए। आचार्य जिनसेन स्वामी ने आदिपुराण, सर्ग 38 में श्लोकसंख्या 127 से 134 तक इसका विस्तारपूर्वक वर्णन किया है, जो मूलतः पठनीय है। इसके अतिरिक्त भी कुछ अन्य प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

किन्तु आजकल कुछ लोग सोचते हैं कि मन्दिर में जिनप्रतिमा के समक्ष विवाह जैसी सांसारिक क्रिया कैसे हो सकती है? अभी हाल ही में एक जोड़े ने कालकाजी नई दिल्ली के जैन मन्दिर में विवाह किया तो अनेक लोगों ने उसकी आलोचना की कि उसने बहुत गलत किया, मन्दिर की पवित्रता भंग की, इत्यादि। किन्तु ऐसा सोचना सिर्फ अज्ञानता ही है। इसमें मन्दिर की कोई पवित्रता भंग नहीं होती। मन्दिर की पवित्रता तो वहां अनुचित आचरण से होती है, किन्तु उस समय वहां कोई अनुचित आचरण नहीं किया जाता, कोई खाना-पीना हंसना-सोना आदि नहीं किया जाता, मात्र संयमपूर्वक सद्गृहस्थ बनने की सच्ची प्रतिज्ञा की जाती है और इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है। अपितु यह तो अत्यंत उचित ही जान पड़ता है। इससे तो रिश्ते में ईमानदारी, दृढ़ता और पवित्रता उत्पन्न होगी।

वैसे भी कोई भी व्रत या प्रतिज्ञा मन्दिर में जाकर जिनप्रतिमा के समक्ष लेने की परम्परा है, उसे ही अधिक उचित माना जाता है। विवाह भी एक ऐसी ही प्रतिज्ञा है, जिसे मन्दिर में जाकर जिनप्रतिमा के समक्ष लिया जाए तो यही अधिक उचित है।

आज भी हम लोग भगवान का चित्र लगाते हैं, मन्दिर से यंत्र और शास्त्र लाते हैं और उन्हें सिंहासन पर विराजमान कर उनके समक्ष ही विवाह करते हैं। सो यह भी मन्दिर ही तो हुआ। अतः यदि कोई जोड़ा साक्षात् ही मन्दिर में जाकर जिनप्रतिमा के समक्ष विवाह-प्रतिज्ञा ग्रहण करता है तो इसमें क्या आपत्ति है? यह तो प्रशंसनीय ही हुआ। आपत्ति तो केवल इस बात पर हो सकती है कि वहां कोई खाने-पीने आदि का अनुचित आचरण कोई करे, जो कि वहां बिलकुल नहीं होना चाहिए। वह सब तो बाद में वहां से बाहर आकर अन्य कहीं धर्मशाला आदि में होना चाहिए।

जिनप्रतिमा के समक्ष विवाह हो- इसके प्रमाणस्वरूप **आचार्य जिनसेन द्वारा रचित आदिपुराण,** सर्ग 38 का निम्नलिखित प्रकरण यथावत् (सभी श्लोक और उनका हिंदी अर्थ) उद्धृत करते हुए मैं अपनी बात पूर्ण करता हूँ-

ततोऽस्य युर्वनुज्ञानादिष्टा वैवाकी क्रिया।
वैवाहिकै कुले कम्यामुचितां परिणेप्यतः॥127॥
सिद्धार्चनविधिं सम्यक् निर्वर्स्य द्विजसत्तमाः।
कुलाग्नित्रयस्यं पूजाः कुर्यस्ताक्षिता क्रियाम्॥128॥
पुण्याश्रमं कचित् सिद्धप्रतिमामिमुखं तयोः।
दम्पत्योः परया भूरया कार्यः पाणिग्रहोत्सवः॥129॥
वैद्यां प्रणीतमद्यीनां चयं द्वयमयैककम्।
ततः प्रदक्षिणीकृत्य प्रसम्य विनिवेशनम्॥130॥
पाणिग्रहणदक्षियी नियुक्त तद्वधूवरम्।
असि सहि चरेद् ब्रह्मव्रतं देवाग्निसाक्षिकम्॥131॥
क्रान्त्वा स्वर्स्याचितां भूमिं तीर्थभूमीर्विहृत्य च।
स्वगृहं प्रविशेद् भूत्या पत्या तद्वधूवरम्॥132॥
विमुक्तकङ्कधसं पश्चात् स्वगृहं शयनीयकम्।
अधिशय्य यथाकालं भोगाक्तैरूपलालितम्॥133॥

सन्तामार्थमृतावेच कामसेवां मिथो मजेत्।
शकिालम्यपेक्षोऽयं कमोऽशक्तेप्वतोऽन्यथा।।134।।

इति विवाहक्रिया।।

हिन्दी अर्थ-

तदनन्तर विवाह के योग्य कुल में उत्पन्न हुई कन्या के साथ जो विवाह करना चाहता है ऐसे उस पुरुष की गुरु की आज्ञा से वैवाहिक क्रिया की जाती है।।127।। उत्तम द्विजों की चाहिए कि वे सबसे पहले अच्छी तरह सिद्ध भगवान की पूजा करें और फिर तीनों अग्नियों की पूजा कर उनकी साक्षीपूर्वक उस वैवाहिकी (विवाह सम्बन्धी) क्रिया को करें।।128।। किसी पवित्र स्थान में बड़ी विभूति के साथ सिद्ध भगवान् की प्रतिमा के सामने वधू-वर का विवाहोत्सव करना चाहिए।।129।। वेदी में जो तीन, दो अथवा एक अग्नि उत्पन्न की थी उसकी प्रदक्षिणाएँ देकर वधू-वर को समीप ही बैठना चाहिए।।130।। विवाह की दीक्षा में नियुक्त हुए वधू और वर को देव और अग्नि की साक्षीपूर्वक सात दिन तक ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना चाहिए।।131।। फिर अपने योग्य किसी देश में भ्रमण कर अथवा तीर्थभूमि में विहारकर वर और वधू बड़ी विभूति के साथ अपने घर में प्रवेश करें।।132।। तदनन्तर जिनका कंकण छोड़ दिया है, ऐसे वर और वधू अपने घर में समयानुसार भोगोपभोग के साधनों से सुशोभित शय्या पर शयन कर केवल सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा से ऋतुकाल में ही परस्पर काम-सेवन करें। काम-सेवन का यह क्रम काल तथा शक्ति की अपेक्षा रखता है इसलिए शक्तिहीन पुरुषों के लिए इससे विपरीत क्रम समझना चाहिए अर्थात् उन्हें ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए।।133-134।। यह सत्रहवीं विवाह-क्रिया है।

जैन विवाह का सच्चा स्वरूप

पं. जितेन्द्र कुमार जैन (जीतू भैया)

अत्यंत हर्ष के साथ सूचित किया जाता है। **श्री राजेन्द्र जी जैन** के सुपुत्र **श्री हितेष जैन जी** का मंगल शुभ विवाह जैन आगमानुसार श्री प्रभु जी के समक्ष सम्पन्न हुआ। और यह विवाह में **परम पूज्य श्वेत पिच्छाचार्य 108 श्री विद्यानंद जी महाराज, आचार्य श्री 108 प्रज्ञसागर जी महाराज एवं आचार्य श्री 108 श्रुतसागर जी महाराज** का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ। यह विवाह बहुत ही सादगी, सहजता, सरलता व संपूर्ण शुद्धि के साथ सम्पन्न हुआ। ऐसा कोई भी कार्य विवाह श्रृंखला में नहीं हुआ जिससे की हमारे जिनालय का अनादर हो। **परम पूज्य मुनिपुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज** का यही कहना है कि आज हमने बड़े ही पुण्य से मनुष्य तन व जैनी कुल पाया है। तो हमें संस्कार, संस्कृति विवेक और जैनत्व को गर्व करते हुये अपने बच्चों की शादी प्रभु का विधान एवं पूर्ण भक्ति के साथ भगवान के समक्ष ही होना चाहिए जो आज राजस्थान एवं अन्य क्षेत्रों में सम्पन्न हो रही है। **श्री हितेष जैन** के शुभ विवाह में वर वधू दोनों ने त्याग, संयम एवं नियम को लेकर प्रभु की आराधना की जो कि सराहनीय व प्रशंसनीय है। आज शादी के सफल न होने का कारण यह भी है कि रात्री में शादी घोड़े पर बैठकर दूल्हा अशुद्धि को पाकर प्रभु की आराधना करता है जो कि महान दोष है। पूरे शादी प्रांगण में कितनी अशुद्ध महिला होंगी जो वरमाला के समय वर वधू को छू लेती है। फिर पूजा करना भी महान दोष है। शादी में शाम से लेकर फेरे तक समय ज्यादा हो जाने पर वर-वधू नीहार (बाथरूम) के लिये जाना ही पड़ता है। और कपड़े वर-वधू के बहुत भारी होने से कभी भी कोई बदल ही नहीं फिर अशुद्धि वस्त्रों में पूजा करते जो कि महान दोष है। ऐसे महान दोषों से जैन आगम के अनुसार दिन में विवाह व प्रभु जिनालय में ही करना चाहिए। आज सभी धर्मों में देखिए चाहे वो सिक्ख, चाहे मुस्लिम हो चाहे क्रिस्चन हो सभी अपने बच्चों के विवाह दिन में सम्पन्न कराते हैं फिर जैनियों जागो हम कहाँ जा रहे हैं। हम क्या हैं? हमें क्या करना है, हमने क्या किया, जरा सोचो विचार करो चिंतन करो, मनन करो कि हम कैसे जैनी हैं। वर वधू भी सौधर्म इंद्र इंद्रानी का स्वरूप है। और प्रभु के समक्ष पूजा करना उनका महान पुण्य है।

मेरे संपूर्ण विश्व, संपूर्ण भारत की जैन समाज से अनुरोध है **जागो और जगाओ।** सभी अपने बच्चों की शादी मंदिर में ही कराये प्रभु की साक्षी में। हम क्यों उनका पुण्य क्षीण कर रहे हैं। हम क्यों उनके जीवन को पतन में ले जा रहे हैं। हम क्यों उनको पाप का बंध करा रहे हैं। इसमें पूरा परिवार दोषी है। यदि आप सच्चे जैनी, जैन प्रभु के उपासक हो तो कसम खाओ और नियम लो कि बच्चों के फेरे व शादी दिन में ही करेंगे जैसे संपूर्ण विशुद्धि के साथ कालका जी मंदिर में संपन्न हुई। मैंने शुभकामना व सहृदय से धन्यवाद देता हूँ सकल दि. जैन समाज कालकाजी को आचार्य श्री का आशीष लेकर उन्होंने हमारे धर्म की विवाह परंपरा।

जैनागम में वर्णित विवाह की प्रक्रिया ही सर्वश्रेष्ठ

-आचार्य श्रुतसागर मुनि

सर्वप्रथम आचार्यों ने समस्त श्रावकों को मुनि दीक्षा का उपदेश देते हैं। जब मुनि दीक्षा लेने में असमर्थ हैं तब ऐलक, क्षुल्लक और महिलाओं के लिए आर्यिका, क्षुल्लिका दीक्षा का उपदेश देते हैं। जिन श्रावकों को महाव्रत एवं अणुव्रत भी कठिन मालूम होता है वह अपनी शक्ति के अनुसार (1) दर्शन प्रतिमा (2) व्रत प्रतिमा (3) सामायिक प्रतिमा (4) प्रोषध प्रतिमा (5) सचित्त त्याग प्रतिमा (6) रात्रि भोजन त्याग प्रतिमा (7) ब्रह्मचर्य प्रतिमा (8) आरम्भ त्याग प्रतिमा (9) परिग्रह त्याग प्रतिमा (10) अनुमति त्याग प्रतिमा (11) उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा धारण करने का उपदेश देते हैं। साथ में सातवें ब्रह्मचर्य प्रतिमा तक घर में रहकर धर्मध्यान करते हैं और छठवीं प्रतिमा तक विवाह करके गृहस्थ आश्रम में धर्मध्यानपूर्वक रहने का उपदेश दिया हैं।

आचार्य अकलंक देव 'राजवार्तिक' में विवाह किसे कहते हैं इसकी धार्मिक परिभाषा बताते हैं-

सद्वेद्यस्य चारित्रमोहस्य चोदयात् विवहन।
कन्यावरणं विवाह इत्याख्यायते।।

-रा. वा./7/28/1/554/22

अर्थ- सातावेदनीय और चारित्रमोह के उदय से कन्या के वरण करने को विवाह कहते हैं।

जिनसेन आचार्य ने 'विवाह' अर्थात् 'पाणिग्रहण संस्कार' को गृहस्थ दीक्षा बताया है वह इस प्रकार है-

पाणिग्रहण दीक्षायां नियुक्तं तद्वधूवरम्।
आसप्ताहं चरेद् ब्रह्मव्रतं देवाग्निसाक्षिकम्।।

-आदिपुराण/38/131

अर्थ- विवाह की दीक्षा में अर्थात् गृहस्थ दीक्षा में नियुक्त हुए वधू और वर को देव और अग्नि की साक्षीपूर्वक सात दिन तक ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना चाहिये।

इसके अलावा 'संस्कृत-हिन्दी आप्टेकोश' में दीक्षा शब्द का अर्थ धर्म संस्कार विवाह दीक्षा इस प्रकार विवाह को दीक्षा बताया गया है अर्थात् विवाह गृहस्थ दीक्षा है। इसी प्रकार 'नालन्दाकोश' में भी विवाह दीक्षा लिखा है। अन्य और कोशग्रन्थों में भी विवाह शब्द के लिये धर्म संस्कार विवाह दीक्षा और गृहस्थ दीक्षा बताया गया है। यह संस्कार देव-शास्त्र-गुरु एवं परिवार के साक्षीपूर्वक ही विवाह दीक्षा अर्थात् गृहस्थ दीक्षा दी जाती है।

'लाटी संहिता' में कहा है-

देवशास्त्ररून्नत्वा, बन्धुवर्गात्मसाक्षिकम्।
पत्निपाणिगृहितास्यात् अन्या चेटिकामता।।
-लाटी संहिता/2/178

अर्थ- देव-शास्त्र-गुरु को नमस्कार करके तथा अपने भाई-बन्धुओं के साक्षीपूर्वक जिस कन्या के साथ विवाह किया जाता है वह विचाहिता स्त्री पत्नी कहलाती है। ऐसे विवाहिता स्त्री के अलावा सेवा में नियुक्त अन्य सब स्त्रियाँ सेवा करने के कारण दासी कहलाती हैं।

'आदिपुराण' में आचार्य जिनसेन स्पष्ट निर्देश देते हुए कहते हैं-

ततोऽस्य गुर्वनुज्ञानादिष्टा वैवाहिकी क्रिया।
वैवाहिके कुले कन्यामुचितां परिणेष्यतः।।

-आदिपुराण/38/127

अर्थ- तदनन्तर विवाह के योग्य कुल में उत्पन्न हुई कन्या के साथ जो विवाह करना चाहता है, ऐसे उस पुरुष की गुरु की आज्ञा से विवाह की क्रिया की जाती है।

सिद्धार्चनविधिं सम्यक् निर्वर्त्य द्विजसत्तमाः।
कृताग्नित्रयसंपूजाः कुर्युस्तत्साक्षितां क्रियाम्।।

-आदिपुराण/38/128

अर्थ- उत्तम श्रावकों को चाहिए कि वे सबसे पहले अच्छी तरह सिद्ध भगवान की पूजा करें और फिर तीनों अग्नियों की पूजा कर उनकी साक्षीपूर्वक उस विवाह की क्रिया को करें।

पुण्याश्रमे क्वचित् सिद्धप्रतिमाभिमुखं तयोः।
दम्पत्योः परया भूत्या कार्यः पाणिग्रहोत्सवः।।

-आदिपुराण/38/129

अर्थ- किसी पवित्र स्थान में बड़ी विभूति के साथ सिद्ध भगवान् की प्रतिमा के सामने वर-वधू का विवाहोत्सव करना चाहिए।

वेद्यां प्रणीतमग्नीनां त्रयं द्वयमथैककम्।
ततः प्रदक्षिणीकृत्य प्रसज्य विनिवेशनम्॥

-आदिपुराण/38/130

अर्थ- वेदी में जो तीन, दो अथवा एक अग्नि उत्पन्न की थी, उसकी प्रदक्षिणाएँ देकर वर-वधू को समीप ही बैठना चाहिए। विवाह में कौन क्या चाहता है-

कन्या वरयंते रूपं, मातावित्तं पिताश्रुतं।
बान्धवा हितमिच्छंति, मृष्टान्नेतरेजनः॥

-नीतिबोध/121

अर्थ- कन्या सुन्दर एवं रूपवान् वर चाहती है, उसकी माँ धनवान दामाद हो यह चाहती है (समधन अर्थात् अपने समान धनवाला हो यह चाहती है) उसके पिता दामाद पढ़ा-लिखा हो यह चाहते हैं और उसके भाई-बन्धु-बान्धव, रिश्तेदार उसका हित कल्याण हो यह चाहते हैं अन्य बाराती लड्डू मिठाई चाहते हैं।

वह धन जो वर को विवाह के समय (कन्या) लड़की वालों से मिलता है कन्यादान के साथ वर को दक्षिणा दी जाती है, वह वरदक्षिणा खुश होकर दिया जाता है परन्तु कालान्तर में यह वरदक्षिणा शब्द दहेज बन गया जो देने वाले एवं लेने वाले का तन-मन चेतन में जलन उत्पन्न करता है, वही दहेज है।

श्री जिन मंदिर जी में विवाह संपन्नता पर हार्दिक बधाई

-रोहिणी जैन, फरीदाबाद

जैन धर्म का मुख्या आधार अहिंसा तथा अपरिग्रह है! अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धात को व्यवहार में दैनिक कार्य में अनेक प्रकार से अपनाया जा सकता है!

प्रत्येक माँ-बाप अपने जीवन में संयम, अहिंसा तथा अपरिग्रह का पालन करते हुए इच्छा करता है कि मेरे और परिवार के सदस्य से हिंसा न हो! बच्चों के पालन पोषण के पश्चात उन्हें गृहस्थ धर्म में प्रवेश कराना होता है, जिसके लिए उन्हें वैवाहिक संस्कार दिए जाते है! वैवाहिक संस्कार पवित्र प्रेम तथा मैत्री का प्रतिक है, पत्नी पुरुष की अर्धांगिनी बनती है। इस मांगलिक संस्कार में कुरूतियों से बचने के लिए जैन परिवार कुछ ऐसा कार्य करें जिसे अन्य धर्म के लोग भी अपनाये!

धर्म की मर्यादा में विवाहपूर्वक जीवन बिताया जाये तो अनेक प्रकार के सांसारिक अपवादों तथा विपतियों से बच सकते है। हिंसा और परिग्रह से बचने के लिए जैन परिवार तथा जैन युवा युवती को चाहिए की उनके यहाँ शादी दिन में ही हो, बिना दहेज की हो तथा पवित्र स्थान पर (सिद्ध परमेष्ठि के साक्ष्य में) ही शादी के संस्कार दिए जाये।

आचार्य श्री विद्यानन्द जी, आचार्य श्री श्रुतसागर जी महाराज, श्री सुधा सागर जी महाराज आदि साधु संत अपने प्रवचनों में समाज को आवाहन करते है कि आगम के अनुसार शादी का बंधन पञ्च परमेष्ठी के सम्मुख होना अति उत्तम है। **आदि पुराण** में लिखा है कि विवाह उत्सव पवित्र स्थान में सिद्ध भगवन की प्रतिमा के सामने करना चाहिए और विवाह उपरांत तीर्थ क्षेत्र के दर्शन करे! इसी श्रृंखला में विवाह का निमंत्रण पत्र सर्व प्रथम मंदिर जी में पहुंचाते है!

इसी भावना से उत्साहित होकर दिल्ली कालकाजी गोविंदपुरी निवासी श्री राजेंद्र प्रशाद जैन ने अपने पुत्र हितेश जैन (एडवोकेट) का विवाह संस्कार 20/06/2018 को दिन में करवाने का निश्चय किया! बहुत ही सादगी से घोड़ी, बेंड के बिना ही कालकाजी जैन मंदिर के साथ अग्रवाल धर्मशाला में वरमाला के पश्चात् मंदिर जी में गर्भ गृह के बाहर पूरी शुद्धता के साथ फेरो का प्रबंध किया गया जिसमें हवन कुंड के बिना, दीपक को अग्नि का प्रतिरूप मानकर भगवान महावीर स्वामी जी की प्रतिमार के समाने पंडित जीतेन्द्र (जीतू भईया) के सानिध्य में विवाह संस्कार पूर्ण किये।

इस विवाह के लिए हम सभी **अखिल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद्** का विशेष आभार प्रकट करते है जिन्होंने साधू संतो तथा वरिष्ठ विद्वानों से सलाह लेकर मंदिर जी में विवाह कार्यक्रम के आयोजन की सहमति प्रदान करी।

मैं अपने परिवार सहित **श्री राजेन्द्र प्रशाद जैन** एंव नव विवाहित वर-वधु **(हितेश जैन एवं रूचि)** को हार्दिक शुभकामनायें देती हूँ।

क्या जिनप्रतिमा के समक्ष विवाह उचित है?

डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन, निदेशक
क. जे. सोमैया जैन, अध्ययन केन्द्र, मुम्बई

भारतीय संस्कृति में संयम और सदाचार की सर्वत्र प्रेरणा दी गई है। उसमें गृहस्थ धर्म भी संयम और मर्यादित जीवन का ही एक आदर्श निदर्शन होता है। इस गृहस्थ धर्म का आधारभूत संस्कार है-विवाह। यह मात्र भौतिक आवश्यकता के लिए, अपितु नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति में भी सहायक होता है, यदि इसकी मर्यादा का सही रीति से निर्वाह किया जाये।

जिस प्रकार गतिमान वाहन को नियंत्रित करने के लिए उसमें ब्रेक की आवश्यकता होती है, अन्यथा वह वाहन स्वयं के लिए और अन्य के लिए भी घातक सिद्ध होता है। उसी प्रकार अमर्यादित जीवन शैली वाला व्यक्ति स्व-पर के लिए घातक सिद्ध होता है, इसलिए जीवन शैली को मर्यादित बनाने के लिए विवाह करके गृहस्थ धर्म में प्रवेश आवश्यक हो जाता है। गृहस्थ धर्म शौच, विशुद्ध आचार, पवित्र जीवन का शुभारम्भ है।

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में विवाह एक ऐसा संस्कार है, जो जीवनरूपी रेलगाड़ी को पति-पत्नी गृहस्थधर्म रूपी पटरियों पर मर्यादित करके गतिशील रखता है। जब तक पति-पत्नी धर्म और मर्यादाओं का पालन करते हैं, तब तक उनकी गाड़ी कभी पटरी से नहीं उतरती है, कोई दुर्घटना नहीं होती है तथा वे धर्म, अर्थ एवं काम रूपी लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए मोक्ष रूपी परम लक्ष्य का भी साधन कर सकते हैं।

भारतीय पद्धति में पाये जाने वाले सोलह संस्कारों में से विवाह संस्कार भी एक है। यह एक पवित्र प्रेम और मैत्री का प्रतीक है। पत्नी ही वास्तविक मित्र होती है, जैसा कि महाभारत में कहा है-"अर्ध भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखा"। (महाभारत, आदिपर्व 74/41) अर्थात् पत्नी पुरुष की अर्धांगिनी है, पत्नी ही उसकी श्रेष्ठतम मित्र है अतः विवाह बनाने के लिए उसमें प्रेम, त्याग, समर्पण और निष्ठा की आवश्यकता है।

इतने उच्च लक्ष्य को लेकर सम्पन्न किये जाने वाले विवाह संस्कार को लोगों ने आज विषयभोग के पोषण का ही साधन मान लिया है, यही कारण है कि आये दिन अनेक बुरे समाचार सुनने को मिलते रहते हैं। विवाह धर्म, अर्थ और काम पुरुषार्थ का साधन है। विवाह की परम्परा प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव के समय से ही प्रारम्भ हो गई थी, क्योंकि उसके पूर्व भोगभूमि थी, जिसमें युगलिक जन्म लेते थे, किन्तु ऋषभ के समय से कर्मभूमि के प्रारम्भ हो जाने से ऋषभदेवजी ने विवाह की विधि से लोगों को परिचित कराया।

जैन ग्रंथ 'तत्वार्थसूत्र' की टीका 'तत्वार्थराजवार्तिक' में सातावेदनीय और चारित्र मोहनीय के उदय से विवहन अर्थात् कन्यावरण करने को विवाह कहा गया है-"सद्वेद्यस्य चारि. मोहस्य चोदयाद् विवहनं, कन्यावरणं विवाह इत्याख्यायते।" विवाह का लक्ष्य न केवल भोग है, अपितु वंश परम्परा चलाना और संयमपूर्वक काम-सेवन करना है।

आज विवाह को लेकर लोगों में यह भ्रम चल रहा है कि विवाह भोग का साधन है, अतः इसे मंदिर में या जिनप्रतिमा के समक्ष सम्पन्न नहीं करना चाहिए। इस सम्बन्ध यदि हम आगम के आलोक में विचार करें तो हम पायेंगे कि विवाह को जिनप्रतिमा के समक्ष सम्पन्न करना कहां तक उचित है?

उपर्युक्त संदर्भ में हमें आदिपुराण के अध्याय 36 के 129वें श्लोक को देखना चाहिए-"पवित्र स्थान में बड़ी विभूति के साथ सिद्ध भगवान की प्रतिमा के सामने वर-वधू का विवाहोत्सव करना चाहिए।" इतना ही नहीं, जिसे हम हनीमून मनाना कहते हैं, उसके संदर्भ में भी आगे कहा है-"फिर अपने योग्य किसी देश में भ्रमण कर अथवा तीर्थभूमि में विहारकर वर और वधू बड़ी विभूति के साथ अपने घर में प्रवेश करें।" (आदिपुराण अध्याय-29 श्लोक 132)

जिनेन्द्र भगवान को माता-पिता, भाई-बन्धु और मित्र मानते हुए उन्हें अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं में आहूत

करने की प्रथा पुराकाल से ही चली आ रही है। यथा विवाह के निमंत्रण पत्र जिनेन्द्र मंदिर में पहुंचाना भी इस बात का प्रतीक है। अत: विवाह जैसा महान कार्य भी जिनेन्द्र की साक्षी में हो तो कोई बुरा नहीं है। इसी को नीतिवाक्यामृत में भी सुदृढ़ किया गया है–"युक्ति तो वरणविधानमग्निदेव-द्विजसाक्षिकं च पाणिग्रहणं विवाह:" अर्थात् अग्नि वीतरागी देव और द्विज (प्रतिष्ठाचार्य विद्वान्) की साक्षीपूर्वक पाणिग्रहण क्रिया का सम्पन्न होना विवाह है।

इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि धर्म, अर्थ और कामरूप लक्ष्य जिसका है, ऐसा विवाह जिनेन्द्र की प्रतिमा के समक्ष विवाह किया जा सकता है, किन्तु हां, उसमें कुछ मर्यादा का पालन अवश्य ही करना चाहिउ, जैसे मंदिर के प्रांगण का विवाह के सहभोज में उपयोग करना, वहां बारातियों का ठहराना, शयन करना, आदि से अवश्य ही बचना चाहिए।

दिगम्बर जैन मंदिरों में विवाहिक कार्यक्रम वैवाहिक कुरीतियों के निवारण का उचित उपाय है

राजेंद्र कुमार जैन सहारनपुर
पूर्व संपादक : वीर

वैवाहिक कुरीतियों के बारे में हमने वीर में एक सम्पादकीय तीन चार वर्ष पूर्व लिखा था जिसमें बढ़ती हुयी वैवाहिक कुरीतियों पर चर्चा करते हुये हमने एक सुझाव लिखा था कि वैवाहिक कुरीतियों पर अंकुश लग सकता है यदि जैन समाज अपने जैन मंदिरों में ही फेरे आदि कराने का नियम बना दे। सिख समाज में ऐसा ही नियम लागू है। वहां विवाह दिन में ही कराने का विधान है और विवाह भी गुरुद्वारे में ही संपन्न होता है। इसी प्रकार मुस्लिम समाज में भी शादी दिन में ही कराये जाने का नियम है। ईसाईयों में भी विवाह की रस्में गिरजाघर में ही सम्पन्न होती हैं।

हमने एक सुझाव भी दिया था। हर मंदिर में वेदी के हाल के बाहर एक चौक होता है जिसमें आसानी से 50-60 लोग बैठ सकते है। इसी चौक में यदि विवाह के फेरे होने लगें तो आसानी से फेरों की रस्म हो सकती है और किसी को भी कोई परेशानी नहीं होगी। इसका एक लाभ यह होगा कि फेरे दिन में ही होने लगेंगे क्योंकि मंदिर जी में भगवान के सम्मुख पूजन दिन में ही होता है। इस सुझाव का विरोध केवल एक व्यक्ति ने किया था और अन्य पाठकों ने हमारी बात का समर्थन किया था।

आज समाज के लोग दिन में विवाह की रस्मे इस कारण नहीं करते हैं कि दिन में अधिकांश लोगों के लिए विवाह के कार्यक्रम में भाग लेना संभव नहीं होगा और इस कारण आने वाले लोग कम हो जायेंगे। इस बारे में मेरा यह मानना है कि विवाह की रस्म खास रस्म होती है और इस रस्म में हर रिश्तेदार व् मित्र और समाज का हर व्यक्ति जो उस परिवार से घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है भाग लेना चाहेगा। हमारे पास ऐसे अनेक उदारहण है जहाँ दिन में सगाई व् गोद भराई की रस्मे पञ्च सितारा होटलों में होती हैं और समाज पूरी संख्या में इन कार्यक्रमों में भाग लेता हैं।

कुछ वर्ष पूर्व ब्रिटेन की महारानी ने अपने पोते की शादी में दिन में भोजन का निमन्त्रण दिया था और वहां सभी लोग दिन के समय भोजन करने आये। हमें यह जानकर हर्ष हुआ कि **कालका जी के जैन मंदिर जी में एक जैन भाई ने विवाह की सारी रस्में श्री मंदिर जी के अंदर ही की। यह सभी कार्यक्रम दिन में ही सम्पन्न हुए।** इसके लिए उन जैन बन्धु की जितनी प्रशंसा की जाये वो कम होगी एवम जैन समाज को भी ऐसे लोगों को प्रोत्साहित करना चाहिए। अभी हाल ही में **मुनि सुधासागर जी महाराज** के आशीर्वाद से **अजमेर** निवासी **श्री सर्वेश जैन** ने अपनी कन्या **सोनी जैन** का शुभ विवाह सोनी जी की जैन नशिया जी अजमेर में संपन्न किया और फेरे व् वरमाला दोनों कार्यक्रम भगवान के सम्मुख हुए एवम् फालतू खर्च कोई नहीं किया गया। आचार्य विद्या सागर जी के महान प्रभावक शिष्य **मुनि सुधा सागर जी महाराज** मंदिर जी में विवाह की रस्म करने को अपना आशीर्वाद दे सकते हैं। तो इससे यह बात साफ हो जाती है कि मंदिर जी में विवाह की रस्म करने में कोई बुराई नहीं हैं।

आजकल विवाह में 100 से अधिक व्यंजन रक्खे जाने लगे हैं जिसमें धन की तो बर्बादी होती ही है खाने की भी बर्बादी होती है। विवाह में शराब आदि का सेवन भी होने लगा है जिस पर रोक तभी लगेगी जब विवाह की रस्में श्री मंदिर जी में होने लगेगी।

दिन में सादगी के साथ विवाह सम्पन्न

नई दिल्ली। **चिं हितेश जैन** सुपुत्र **श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन,** गोविन्दपुरी, कालका जी, नई दिल्ली का शुभ विवाह **सौ. रुची** सुपुत्री **श्री दिनेश कुमार, कोरीखेरा** फर्रुखाबाद (उ.प्र.) निवासी के साथ 20 जून 2018 को दिन में बहुत ही सादगीपूर्ण वातावरण में हर्षोल्लास के साथ **अ.भा. दिगम्बर जैन परिषद भवन, दिगम्बर जैन मंदिर, कालकाजी एक्स. नई दिल्ली** में संपन्न हुआ। विवाह के सभी धार्मिक अनुष्ठान मंदिरजी की वेदी के सामने **पं. जितेन्द्र कुमार जैन 'जीतू भैया'** के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

उल्लेखनीय है **अ. भा. दिगम्बर जैन परिषद,** विवाह में होने वाले फिजूलखर्ची के प्रचलन का पुरजोर विरोध करते हुए सादगी के साथ दिन में विवाह संपन्न किये जाने की प्रबल समर्थक है। ऐसे युगल दंपत्ति एवं उनके परिवारों को परिषद के कार्यक्रमों में ऐसे विवाहों को बढ़ावा देने के लिए कई बार सम्मानित भी किया गया है।

हम सभी परिषद परिवार की ओर से दिन में विवाह संपन्न होने पर दोनों परिवारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान करते हुए नवयुगल दम्पत्ति के चिरआयु, सुखमय, समृद्धशाली वैवाहिक जीवन की मंगल कामना करते हैं।

श्वेतपिच्छाचार्य विद्यानंद जी मुनिराज के दर्शन करने पहुँचे वर-वधु

-अनिल कुमार जैन
राष्ट्रीय महामंत्री

परिषद भवन-मंदिरजी में मुनिश्री का पदार्पण

नई दिल्ली। अ.भा. दिगम्बर जैन परिषद भवन-दिगम्बर जैन मंदिरजी में **आचार्यश्री वसुनन्दी जी महाराज** के परम प्रभावक शिष्य **श्री शिवानंद जी** व **श्री प्रश्मानंद जी महाराज** 5.7.2018 को दिगम्बर जैन मंदिर सेक्टर-37 फरीदाबाद से प्रात: 5.00 बजे विहार करके कालकाजी जैन मंदिरजी में पधारे। स्थानीय समाज के श्रावक/श्राविकाओं ने उपस्थित होकर महाराजश्री के आहारचर्या की व्यवस्था में सम्मिलित हुई। सभी प्रकार की व्यवस्था परिषद के पदाधिकारियों ने की। मुनिश्री ने 6 जुलाई को प्रात: 5.00 बजे कालकाजी से कुन्दकुन्द भारती नई दिल्ली के लिए विहार किया।

श्री अनिल कुमार जैन (नेपाल) सम्मानित

श्रवणबेलगोला। अ. भा. दिगम्बर जैन परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री **अनिल कुमार जैन** एवं उनकी धर्मपत्नी **श्रीमती रेनू जैन** का श्रवणबेलगोला में **भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामी** जी ने उन्हें भगवान बाहुबलि एवं हुमचा के **भट्टारक स्वामी श्री देवेन्द्रकीर्ति** जी ने माता पद्मावती का प्रतीक चिह्न, शॉल व शील्ड प्रदान कर अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षा **श्रीमती सरिता जैन** चैन्नई, प्रसिद्ध समाजसेवी व लेखक **हंसमुख भाई गांधी** इन्दौर व अन्य गणमान्य व्यक्ति भी सभा में भी उपस्थित थे।

महिला परिषद की गतिविधियां

श्री त्रिभुवन तिलक महामंडल विधान

नई दिल्ली। गुरुवार 12 जुलाई 2018 को **परिषद भवन-दिगम्बर जैन मंदिर** जी में प्रात: प्रक्षाल, नित्यनियम पूजा के पश्चात "श्री त्रिभुवन तिलक महामंडल विधान" **अ. भा. दि. जैन महिला परिषद- दिल्ली प्रदेश** (साउथ दिल्ली संभाग) द्वारा आयोजित किया गया। पूजा विधान का कार्यक्रम **पं. जितेन्द्र जैन 'जीतू भैया'** के सान्निध्य में विधि-विधान पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर संभागीय अध्यक्षा **रेखा गोयल जैन,** सचिव **रेनू जैन,** उपाध्यक्ष **लता जैन** सहित सभी पदाधिकारीगण एवं स्थानीय समाज के श्रावक/श्राविकाओं ने सम्मिलित होकर भक्तिपूर्ण भाव से पूजा आराधना करते हुए धर्मलाभ प्राप्त किया।

उल्लेखनीय है कि महिला परिषद साउथ दिल्ली संभाग द्वारा मंदिरजी में आयोजित प्रतिमाह के द्वितीय एवं चतुर्थ मंगलवार को **पं. जितेन्द्र जैन** के निर्देशन में तत्त्वार्थसूत्र की महत्वता पर सूक्ष्मता से व्याख्यान चल रहा है। जिसमें काफी धर्मप्रेमी बन्धु उपस्थित होकर धर्मलाभ अर्जित कर रहे हैं।

*-**रेनू जैन,** सचिव-महिला परिषद (दक्षिण संभाग), नई दिल्ली*

श्री जिन मंदिर में विवाह

जैनागम की परम्परा के अनुसार देव, शास्त्र, गुरु की साक्षी में देवस्थान के प्रांगण में श्रावक शुद्धि पूर्वक गृहस्थ जीवन के मांगलिक कार्य विवाह आदि किये जा सकते हैं।

-प्रो. प्रेम सुमन जैन

उदयपुर (राज.)

विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में गिरनारजी में राष्ट्रीय संगोष्ठी

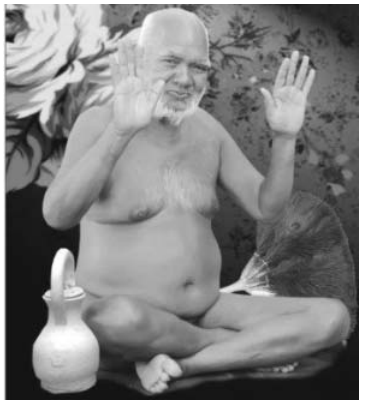

परम पूज्य, गिरनार गौरव, **आचार्यश्री 108 निर्मलसागर जी महाराज के ससंघ** सान्निध्य, **क्षुल्लक श्री 105 समर्पण सागरजी महाराज** के निर्देशन, **श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद्** के तत्त्वावधान में दिनांक 17 एवं 18 जुलाई 2018 को **"भगवान श्री नेमिनाथ जी की निर्वाण स्थली तब और अब"** विषय गिरनारजी में राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी। आयोजक- **विश्वशांति निर्मल ध्यान केन्द्र ट्रस्ट,** गिरनार तलेटी, भवनाथ, जूनागढ़ (गुज.), स्वागताध्यक्ष- **श्री ज्ञानचन्द्र बड़जात्या**- मुम्बई, संगोष्ठी अध्यक्ष- **प्रो. भागचन्द्र जैन 'भास्कर'** नागपुर, संयोजक- **डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज'**- इन्दौर रहे। चयनित विद्वानों को अलग से आमंत्रण पत्र के साथ विस्तृत कार्यक्रम की जानकारी प्रेषित की गयी। दिनांक 17 जुलाई को पूज्य, गिरनार गौरव, **आचार्यश्री 108 निर्मलसागरजी महाराज की 51वां स्वर्णिम दीक्षा जयंती महोत्सव** के अवसर पर गुरुपूजन, विनयांजलि एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम हुऐ व **19 जुलाई को श्री 1008 भगवान् नेमिनाथ स्वामी का निर्वाण लाडू** गिरनार पर्वत की आलोक टोंक पर चढ़ाया गया।

-डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इन्दौर

दिल्ली (2018) में होने वाले मंगल चातुर्मास स्थापना

आचार्य श्री विद्यानंद जी	- कुंद कुंद भारती	मुनि श्री विहर्षसागर जी	- श्याम पार्क एक्स, साहिबाबाद
आचार्य श्री श्रुतसागर जी	- कुंद कुंद भारती	मुनि श्री संकल्प भूषण जी	- नोयडा सैक्टर-50
आचार्य श्री आनंदसागर जी 'मौनप्रिय'	- ध्यान तीर्थ, वसंत कुंज	मुनि श्री शिवानंद जी	- ज्योति नगर
आचार्य श्री विशदसागर जी	- न्यू उस्मानपुर	मुनि श्री विहसंत सागर जी	- मौजपुर
आचार्य श्री अनुभवनंदी जी	- विकास नगर लोनी	मुनि श्री अनुमान सागर जी	- कबूल नगर
आचार्य श्री सौभाग्यसागर जी	- राजा बाजार, कनॉट प्लेस	मुनि श्री क्षीर सागर जी	- त्रिनगर
आचार्य श्री प्रज्ञसागर जी	- ग्रीन पार्क दिल्ली	गणिनी आर्यिका श्री चंद्रमति जी	- लाल मन्दिर चांदनी चौक
एलाचार्य श्री अतिवीर जी	- बलराम नगर, लोनी	गणिनी आर्यिका श्री चंद्रमति जी	- चंद्रमति आश्रम, बड़ागाँव
एलाचार्य श्री त्रिलोक भूषण जी	- कैलाश नगर गली न.-2	गणिनी आर्यिका श्री सरस्वती जी	- निर्भय एन्कलेव खेकड़ा
उपाध्याय श्री गुप्तिसागर जी	- गुड़मण्डी, राणा प्रताप बाग	आर्यिका श्री कीर्तिश्री जी	- ब्रह्मपुरी
मुनि श्री प्रणम्यसागर जी	- रोहिणी	आर्यिका श्री सृष्टि भूषण जी	- नजफगढ़
मुनि श्री वारिषेण जी	- साधुवृति आश्रम बड़ागाँव	आर्यिका श्री सरस्वती भूषण जी	- गुरुग्राम
मुनि श्री नमिसागर जी	- जय शांतिसागर निकेतन, मंडोला	आर्यिका श्री दृष्टि भूषण जी	- त्रिलोक तीर्थ बड़ागाँव
मुनि श्री तरूणसागर जी	- राधापुरी, कृष्णा नगर	आर्यिका श्री वर्धस्वनंदिनी जी	- बैंक एन्कलेव

अ.भा.दि. जैन महिला परिषद् (म.प्र.) राजुल संभाग मार्च+अप्रैल+मई+जून 2018 माह की गतिविधियाँ

राजुल संभाग की सभी सदस्य प्रान्तीय नारा, **"असतो मा सद्गमय तमसो मां ज्योर्तिगमय"** एवं प्रान्तीय प्रोजेक्ट- **"बुलन्द इरादे- निश्चित कामयाबी"** को सार्थकता प्रदान कर समाज में सेवा भावी की उत्तम छवि प्रस्तुत कर रही है।

ग्वालियर शाखा, नया बाजार शाखा, सी.पी. कॉलोनी मुरार शाखा, गुना शाखा, आरोन शाखा द्वारा किये गये सामाजिक कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत है।

ग्वालियर शाखा- नव संवत् पर जिन वाणी की प्रस्तुती, कृपा दान आश्रम में भोजन वितरण, प्याऊ, दानापानी, पशु प्याऊ, का कार्यक्रम दौलतगंज मंदिर में किया गया, मजदूर दिवस पर मजदूरों का सम्मान किया गया एवं टी.शर्ट, शाफी, नारियल भेंट किया गया 48 दीपकों से भक्तामर जी की आरती की गई शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया जिसकी मुख्य अतिथि **श्रीमती मायासिंह जी, मंत्री** मध्य प्रदेश सरकार थी, पर्यावरण दिवस पर बालभवन में स्वच्छता अभियान चलाया गया स्वर्ण मंदिर में जिनवाणी का रख रखाव, किया गया व जीर्ण शीर्ण जिनवाणी को नया रूप दिया तथा कवर चढ़ाये गये, योग शिविर लगाया गया सारे कार्यक्रम अध्यक्ष **रेखा कासलीवाल** एवं सचिव **मीनू भोंच** की देख रेख में सम्पन्न हुये।

नया बाजार शाखा- मुनि श्री विशोक सागर जी की ससंघ पीछी परिवर्तन में महिला परिषद द्वारा 2100/ की राशि दी गई महावीर जयंती बहुत ही धूमधाम से मनाई गई झांकिया भी लगाई गई, धार्मिक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

सांगानेर जी के मंदिर में 35000/- की राशि दी गई मंदिर में सोने का कलश बनवाने हेतु 15 तोला सोना एवं वरई में गोशाला के लिए 21000/- की राशि दी, मजदूर दिवस मनाया गया, प्याऊ, एवं चिड़ियों के लिए दाना पानी की व्यवस्था की गई, शपथ ग्रहण की मुख्य अतिथि **डॉ. नीति जी पांडया जी** एवं विशिष्ट अतिथि **डॉ. आदर्श जी दीवान,** थी दांतों का केम्प लगाया, गया, मंदिर में विद्यान पूजा, पाठ का आयोजन किया गया।

सी.पी.कॉलोनी मुरार शाखा- शपथ ग्रहण समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती प्रर्मिला जी वाजपेयी थी विशिष्ट अतिथि **श्रीमती डॉ. आदर्श दीवान** थी माधव नेत्रहीन आश्रम में बच्चियों को भोजन कराया गया सिहोनियां जी में विधान संस्था द्वारा महावीर, जयंती पर विशाल झांकी लगाई गई सफाई, अभियान चलाया गया, आई केम्प लगाया गया उसमें 150 लोगों के चश्में बनाये गये प्याऊ लगाई गई गाय को पानी पीने के लिए जगह-जगह टंकी लगाई गयी।

गुना शाखा- महावीर जयंती पर शोभा यात्रा निकाली गई, जगह जगह आरती, व स्थल लगाये गये, प्याऊ लगाई गई प्रथम आने वाले 5 बच्चों को पुरुस्कार दिया गया "वाह वाह क्या बात है" इस स्लोगन को लेकर एक हास्य नाटिका की गई आर्ट आफ लिविंग का प्रशिक्षण दिया गया, उसमें कई महत्वपूर्ण बातें समझायी गई।

आरोन शाखा- शीतल जल प्याऊ, पक्षियों के लिए दाना, पानी, चिड़ियों के लिए सकोरे लगाये गये मंदिर में विधान करवाया गया, महावीर जयंती पर जुलूस में झांकिया लगाई गई।

उपरोक्त सभी कार्यक्रम में हमारी प्रान्तीय अध्यक्ष, **श्रीमती डॉ. आदर्श जी दीवान** प्रान्तीय उपाध्यक्ष **रेणु जी गंगवाल,** उपाध्यक्ष **अंगूरी जी जैन** सचिव **श्रीमती माधवी जी शाह** कोषाध्यक्ष **रेखा पाटोदी** केन्द्रीय मंत्री **अरूण जी कासलीवाल** संभाग अध्यक्ष **उषा गोधा** एवं सभी केन्द्रीय एवं प्रान्तीय पदाधिकारी, चेयरपर्सन, हैडजोन विशिष्ट पदाधिकारी उपस्थित रहे सबने भरपूर सहयोग दिया।

श्रीमती रेणू गंगवाल
उपाध्यक्ष

श्रीमती उषा गोधा
संभाग अध्यक्ष
ग्वालियर

(संबंधित कवर पृष्ठ पर देखें)

अहिंसा इन्टरनेशनल (रजि.)

कार्यालय : जीवन विला, 111, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
Ph. No. 011- 23260799, Mob. 9312401353

अहिंसा इन्टरनेशनल पुरस्कारों हेतु नाम आमंत्रित

नई दिल्ली। 1973 में स्थापित समाजसेवी संस्था अहिंसा इन्टरनेशनल द्वारा वर्ष-2018 के निम्न पुरस्कारों के लिए प्रस्ताव आमंत्रित हैं:-

1- अहिंसा इन्टरनेशनल अतरसेन शकुन्तला जयपाल जैन पुरस्कार राशि (21000/-) जैन साहित्य के विद्वान को उनके हिन्दी एवं अंग्रेजी के समग्र साहित्य अथवा कोई मौलिक नवीनतम रचना अथवा कृति की श्रेष्ठता के आधार पर प्रदान किया जायेगा।

2- अहिंसा इन्टरनेशनल भगवानदास शोभालाल डालचन्द जैन शाकाहार, जीवदया एवं रक्षा पुरस्कार राशि (21000/-) शाकाहार प्रसार तथा जीवदया एवं रक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे कर्मठ कार्यकर्ता को उनके कार्य की श्रेष्ठता के आधार पर प्रदान किया जायेगा।

3- अहिंसा इन्टरनेशनल प्रेमचन्द जैन चिकित्सा-रोगी सेवा पुरस्कार राशि (21000/-) यह पुरस्कार किसी भी संस्था/व्यक्ति/डॉक्टर को उसके द्वारा चिकित्सा के क्षेत्र में सेवा/रचनात्मक कार्य करने पर या कोई चिकित्सा क्षेत्र में नई उपलब्धि प्राप्त करने के आधार पर दिया जायेगा।

4- (अ) अहिंसा इन्टरनेशनल विजय कुमार प्रबोध कुमार सुबोध कुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार राशि (21000/-) ।
(ब) अहिंसा इन्टरनेशनल पारसदास अनिल कुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार राशि (21000/-) ।
यह पुरस्कार जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय/रचनात्मक उत्कृष्ट योगदान के लिए श्रेष्ठता के आधार पर दिया जायेगा।

५. अहिंसा इन्टरनेशनल हरिश्चन्द रमेशचन्द अतुल जैन धर्म प्रचार-प्रसार पुरस्कार राशि (21000/-) यह पुरस्कार किसी भी व्यक्ति को उसके द्वारा जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु श्रेष्ठ कार्य करने के आधार पर दिया जायेगा।

६. अहिंसा इन्टरनेशनल जिनेन्द्र वर्णी स्मृति जैन धर्म प्रचार-प्रसार पुरस्कार राशि (21000/-) यह पुरस्कार किसी भी व्यक्ति को उसके द्वारा जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु श्रेष्ठ कार्य करने के आधार पर दिया जायेगा।

7- अहिंसा इन्टरनेशनल प्रेमचन्द नवीन जैन, मेधावी छात्र पुरस्कार राशि 21000/-) यह पुरस्कार दिल्ली एन.सी.आर. के दसवीं कक्षा में CBSE/ICSE की परीक्षा में सभी विषयों में **A+** ग्रेड पाने वाले छात्र/छात्रा को जिसने खेलकूद/वीरता अथवा अन्य किसी क्षेत्र में विशेष रचनात्मक उपलब्धि प्राप्त की हो, प्रदान किया जायेगा।

उपरोक्त पुरस्कारों हेतु नाम का प्रस्ताव स्वयं लेखक/कार्यकर्ता, संस्था अथवा अन्य कोई भी जानने वाला व्यक्ति 31.08.2018 तक निम्न पते पर उसके पूरे नाम व पते, जीवन परिचय संबन्धित क्षेत्र में कार्य विवरण व पासपोर्ट आकार के दो फोटो सहित आमंत्रित हैं। पुरस्कार दिल्ली में आयोजित भव्य समारोह में प्रदान किये जायेगें। पिछले वर्षो में आई हुई प्रविष्टियों पर भी इस वर्ष के पुरस्कारों के लिए विचार किया जा सकता है। अहिंसा इन्टरनेशनल द्वारा लिये गये निर्णय सभी आवेदकों को मान्य होंगे। सभी प्रबुद्ध महानुभावों से निवेदन है कि वे अपनी प्रविष्टियां निम्न पते पर समय से भेजे/भिजवाएं।

:- संपर्क सूत्र :-

- विजय कुमार जैन (अध्यक्ष) ए-६३ मधुबन, विकास मार्ग, दिल्ली-११००६२ (098100 33228)
- श्री ए. के जैन,(महासचिव) अहिंसा इंटरनेशनल, जीवन विला, १११, दरियागंज नई दिल्ली-११०००२ (9312401353)

आपका

ए. के. जैन IRS (Retd)
महासचिव-अहिंसा इंटरनेशनल

स्खलन

तुमने छोड़ जरूर दिया था संसार,
पर धीरे-धीरे तुम्हें लगने लगा था
कि संसार में रहकर संसार छोड़ना
तुम्हारे लिए दुष्कर है!
तुम उसे इस शक्ल में छोड़ते
और वह उस शक्ल में जुड़ जाता,
पकड़ने-पकड़ने में ही पंछी उड़ जाता!
तुम्हारा सपना तुम्हारे कद से बहुत बड़ा था।
बड़े सपने देखने में बुराई नहीं,
बुराई, बड़े सपनों की
इबारत छोटी कर देने में है!
तुम उड़ रहे थे हवा में
ऊँचे और ऊँचे इस भ्रम में
कि सपनों के महल के दरवाजे
बस आसपास ही कहीं हैं!
होते-होते हो यह गया
कि तुम जो थे वो रहे नहीं,
और जो होना चाहते थे
हो नहीं पाए!
तुम्हारी भंगिमाओं से सजी हुई दीवारें
इर्द-गिर्द घूमती कारें अनथक जयकारें
साष्टांग मनुहारें!
तामझाम दिव्य-दिव्य
साजबाज भव्य-भव्य!
तुम्हारी प्रव्रज्या
तुम्हारे निजी आलोक में
प्रज्जवलित होती रही!
बावजूद इस सबके मुझे तुम पर
गुस्सा क्यों आना चाहिए?
वह तुम्हारा निजी निर्णय था,
और यह तुम्हारा निजी स्खलन है!
हाड़माँस के साधारण आदमी के साथ ऐसा होना
आश्चर्य की बात नहीं!
पर तुम पर आश्चर्य नहीं होने के लिए जरूरी है
कि मैं तुम्हें साधारण आदमी मानूं!
बड़ा या खास या विशेष या असामान्य नहीं।
तुम जरूर स्वयं को ऐसा मानते रहे
इसीलिए संकट में हो!
सब चुनते हैं अपने-अपने रास्ते,
तुमने भी चुना एक रास्ता
सही गलत जो भी हो निर्णय तुम्हारा था!
अब तुम अभिशप्त हो
उसी रास्ते पर चलते दिखने के लिए!
त्याग और सन्यास की
जिस गाड़ी में तुम लपक-लपक चढ़े थे
उसमें रिवर्स गियर की सुविधा कभी नहीं रही!
तुम अपने संकल्पों को साध सको
ऐसी मनोकामनाओं के साथ
मुझे तुम पर दया आ रही है,
क्रोध नहीं, न तिरस्कार!
तुम मेरी ओर से निश्चिंत रहो!
सबके सामने मैं तुम्हें
वैसे ही प्रणाम करूँगा
जैसे मैं मन्दिर की मूर्तियों को करता हूँ!
इस बात पर जरूर विचार नहीं किया है
कि ऐसा करने से मेरे प्रणाम
कहीं दूषित तो नहीं होंगे।

- सरोजकुमार
मनोरम, 37 पत्रकार कॉलोनी
इन्दौर-452018
फोन नं. (0731) 2561919, 9406622290

Date of Publication 24/07/2018
Posted at New Delhi
P.S.O on 27-28/07/2018
Advance Every Month

RNI No. 43076/84
Postal Regd. No. DL (S)-01/3480/2018-20
Postage Under U. No. U (S)-55/2018-20
Total 28 Pages

अ. भा. दि. जैन महिला परिषद् (महाराष्ट्र) की विभिन्न गतिविधियाँ

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् ग्वालियर (म.प्र.) विभिन्न की गतिविधियाँ

सम्बंधित विवरण समाचार पृष्ठ पर देखें।

स्वत्वाधिकारी अ.भा. दिगम्बर जैन परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक अनिल कुमार जैन द्वारा बुकमैन प्रिन्टर्स, ए-121, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-110092 (फोनः 9810367902) से मुद्रित करवाकर अ. भा. दि. जैन परिषद के केन्द्रीय कार्यालय- पॉकेट नं. 104, कालकाजी एक्स., अग्रवाल धर्मशाला के साथ, नई दिल्ली-19 (फोन : 26215271) से प्रकाशित। सम्पादक : प्रदीप जैन